।। श्रीश्रीगौरहरिर्जयति ।।

प्रकाशितग्रन्थसंख्या – १४४

साधककण्ठभूषण

प्रथमभाग

[वैष्णववन्दना व परिचय]

प्रकाशक :—

बाबाकृष्णदास

// कुसुमसरोवरवाले //

संवत् २०२५

न्योछावर –५० न.पै.

❀ साधक-कण्ठभूषण ❀

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपदकमलं श्रीगुरून् वैष्णवांश्च
श्रीरूपं साग्रजातं सहगणरघुनाथान्वितं तं सजीवम्।
साद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं कृष्णचैतन्यदेवं
श्रीराधाकृष्णपादान् सहगणललितान् श्रीविशाखान्वितांश्च॥

श्रीश्रीगुरुवन्दना—

आश्रय करिया वन्दों श्रीगुरुचरण।
याहा हइते मिले भाइ कृष्णप्रेमधन ॥ध्रु॥
जीवेर निस्तार लागि नन्दसुत हरि।
भुवने प्रकाश हन गुरु-रूप धरि॥
महिमाय गुरु कृष्ण एक करि जान।
गुरु-आज्ञा हृदे सब सत्य करि मान॥
सत्य-ज्ञाने गुरु-वाक्ये याहार बिश्वास।
अवश्य ताहार हय व्रजभूमे वास॥
यार प्रति गुरुदेव हन परसन्न।
कोन विघ्ने सेह नाहि हय अवसन्न॥
कृष्ण रुष्ट ह'ले गुरु राखिवारे पारे।
गुरु रुष्ट ह'ले कृष्ण राखिवारे नारे॥
गुरु माता गुरु पिता गुरु हन पति।
गुरु विना ए-संसारे नाहि आर गति॥
गुरुके मनुष्य-ज्ञान ना कर कखन।
गुरु—निन्दा कभु कर्णे ना कर श्रवण॥
गुरु—निन्दुकेर मुख कभु ना हेरिबे।
यथा हय गुरु—निन्दा तथा ना याइबे॥

गुरुर विक्रिया यदि देखह कखन ।
तथापि अवज्ञा नाहि कर कदाचन ॥
गुरु-पादपद्मे रहे यार निष्ठाभक्ति ।
जगत तारिते सेइ धरे महाशक्ति ॥
हेन गुरु-पादपद्म करह बन्दना ।
याहा हैते घुचे भाइ सकल यन्त्रणा ॥
गुरु—पादपद्म नित्य ये करे बन्दन ।
शिरे धरि बन्दि आमि ताँहार चरण ॥
श्रीगुरु-चरणपद्म हृदे करि आश ।
श्रीगुरु बन्दना करे सनातन दास ॥

इति श्रीलसनातनदासकृत "श्रीश्रीगुरुवन्दना" समाप्त

सपार्षद-श्रीगौराङ्ग-वन्दना—

श्रीगुरु-चरण बन्दों गौराङ्ग निताइ ।
चरणे शरण देह अद्वैत गोसाञि ॥
गदाधर श्रीनिबास स्वरूप नरहरि ।
पियाओ गोरा-प्रेमामृत मोरे कृपा करि ॥
दयार समुद्र गौर-प्रिय हरिदास ।
मोर पाप-चित्ते कर नामेर प्रकाश ॥
शची जगन्नाथ पद्मा हाड़ाइ पण्डित ।
अबोध-बालके दया एइ सें उचित ॥
अनुग्रह करह कुवेर नाभादेवि ।
तुया पुत्र अद्वैत-चरण येन सेवि ॥
लक्ष्मी विष्णुप्रिया देवि ! निजगण सने ।
कृपा कर नदीया—विहार रहु मने ॥
बसुधा जाह्नवादेबि ! दया कर मोरे ।
तोमार निताइएर लीला स्फुरुक आमारे ॥
दीने दया कर ओहे माधव-रत्नावती ।
तुया पुत्र गदाधर-पदे रहु मति ॥
माधवी मालिनी दमयन्ती देबी माता ।
तोमार विना गोराङ्गेर के आछे रक्षिता ॥
बासुदेब सार्व्वभौम भट्टाचार्य्य ओहे ।
तोमार गौराङ्ग-गुणे मत्त कर मोहे ॥
दास गदाधर मोरे राखह चरणे ।
ना भुलिये श्रीगौराङ्ग जीवने मरणे ॥
गोविन्द गरुड़ कविचन्द्र काशीश्वर ।
मो अधमे कर निज—दासेर किङ्कर ॥
विश्वरूप श्रीयुत श्रीवीरचन्द्र प्रभु ।
देह पद—सेबा येन ना भुलिये कभु ॥
गौरीदास आचार्य्य नन्दन बनमाली ।
ए-दुःखीरे कर निज नाछेर काङ्गाली ॥
विद्यानिधि हलायुध श्रीरघुनन्दन ।
बारेक करह धनी दिया प्रेम—धन ॥
मुरारि गोविन्द ओहे मुकुन्द बासुघोष ।
चरणे धरिया वलि क्षम मोर दोष ॥
अनन्त ईश्वर ओहे माधवेन्द्र पुरी ।
राधाकृष्णप्रेमे मत्त कर कृपा करि ॥
केशव भारती कृपा कर एइबार ।
विश्वम्भरेर लीला येन ना छाड़िये आर ॥
बासुदेव दत्त उद्धारण पुरन्दर ।
त्राण कर फुकारये ए दीन पामर ॥

दामोदर श्रीकर बल्लभ सनातन ।
निज-गुणे देह शुद्ध भकति-लक्षण ॥
ओहे गौर-प्रिय श्रीआचार्य्य सिद्धेश्वर ।
घुचाओ कुबुद्धि हौक् विशुद्ध अन्तर ॥
ओहे गोपीनाथ पट्टनायक एइबार ।
कृपा कर मो सम अधम नाहि आर ॥
भागवत माधव आचार्य्य दयामय ।
एइ कर प्रभुर चरित्रे मन रय ॥
गौरप्रिय—प्राण ओहे रूप सनातन ।
देह शक्ति करि प्रभुर चरित्र वर्णन ॥
श्रीजीव गोपाल—भट्ट दास—रघुनाथ ।
दन्ते तृण धरि कहि कर आत्मसात् ॥
चिरञ्जीव सुबुद्धि-मिश्र राघव कंसारि ।
कर ये उचित किछु बलिते ना पारि ॥
ओहे गौर—प्रिय शुन श्रीधर-ठाकुर ।
लाज त्यजि बलिये दुर्गति कर दूर ॥
श्रीवंशीबदन वक्रेश्वर शिवानन्द ।
दुःख घुचाइया देह बारेक आनन्द ॥
श्रीमधु—पण्डित काशीमिश्र गङ्गादास ।
ओ पद भरसा मोर ना कर नैराश ॥
काशीनाथ हरिभट्ट बसु—रामानन्द ।
दान देह श्रीगौरचन्द्रेर पद—द्वन्द्व ॥
ओहे कवि—कर्णपूर बलिये तोमार ।
निरन्तर मग्न कर गौराङ्ग—लीलाय ॥
कमलाकर—पिप्लाइ शुन हे महेश ।
मो पापीरे त्राणो यश घुषुक अशेष ॥

श्रीकान्त कमलाकान्त निवेदि निश्चय ।
वैष्णव-चरणामृते येन निष्ठा हय ॥
ओहे झाडुदास इहा पुनः पुनः बलि ।
सर्व्वस्व हौक् मोर वैष्णव-पद-धूलि ॥
ओहे कालिदास मोर एइ बड़ आश ।
वैष्णव-उच्छिष्टे येन बाड़ये विश्वास ॥
श्रीजगदानन्द कीर्त्तनीया पट्टावर ।
गौरगुण गाइ शक्ति देह निरन्तर ॥
प्रेममय श्रीमीनकेतन रामदास ।
नित्यानन्द-गुणे मोर कराह उल्लास ॥
विजय-दास अनुपाम कर एइ सेन ।
गौर-पादपद्म मुञि ना छाड़िये येन ॥
ओहे ब्रह्मानन्द श्रीपरमानन्द—पुरी ।
भक्ति-पथे सतत राखह चुले धरि ॥
जगाइ माधाइ दुइ भाइ दया कर ।
अनेक जन्मेर पाप क्षणेके संहार ॥
श्रीचन्द्रशेखर रघुपति उपाध्याय ।
एइ कर सुसिद्धान्त स्फुरुक हियाय ॥
ओहे शिखि माहिती एइ कर मोर हित ।
श्रीकृष्णचैतन्य जगन्नाथे रहु प्रीत ॥
श्रीनाथ तुलसी-मिश्र काला-कृष्णदास ।
मोरे उद्धारिया कर महिमा प्रकाश ॥
सारङ्ग सुन्दरानन्द गोविन्द उदार ।
संसार-यातना ह'ते करह निस्तार ॥
ओहे रत्नबाहु भवानन्द धनञ्जय ।
कातरे करिले दया महिमा बाड़य ॥

ओहे वृन्दावन नारायणीर कुमार ।
तोमरा थाकिते केन ए दशा आमार ॥
उद्धारह यदुनाथ ठाकुर मुरारि ।
बिषय-बिषेर ज्वाला सहिते ना पारि ॥
ओहे प्रतापरुद्र राजा मिनति आमार ।
काम क्रोध आदि दुष्टे करह संहार ॥
शुन हे हिरण्य चिरञ्जीव नारायण ।
नित्यानन्दाद्वैत-गौर-गुणे रहु मन ॥
एइ कर बुद्धिमन्त—खान महाभाति ।
श्रीगौरसुन्दर मोर हौक प्राणपति ॥
हृदयचैतन्य पूर्ण कर मोर आश ।
गौराङ्ग-गुण कहे ये, तार हुङ दास ॥
एइ कर भगवान् श्रीगर्भ श्रीनिधि ।
गौराङ्गेर ब्रजलीला बुझि निरवधि ॥
ओहे श्रीप्रबोधानन्द निवेदि तोमारे ।
गौर-गुणेते बारेक माताह आमारे ॥
जगदीश श्रीमान् सञ्जय सुदर्शन ।
मोरे केन छाड़ हञा पतित-पावन ॥
द्विज हरिदास जगन्नाथ बलराम ।
जगत् उद्धार कर मोरे केन वाम ॥
गौर-प्रिय दण्ड-अधिकारी हरिदास ।
मोरे दण्ड करि अपराध कर नाश ॥
ओहे अभिराम एइ कहिये तोमारे ।
पाषण्डी असुर ह'ते रक्षा कर मोरे ॥
ओहे रामानन्द राय रसेर सागर ।
रसिक—भकत—सङ्ग देह निरन्तर ॥

ओहे गौर-प्रिय श्रीगोविद भक्ति-राशि ।
गौर—पादपद्म-सेवा देह दिवानिशि ॥
गौर-पदे उपाधान ठाकुर शङ्कर ।
गौर-अङ्ग-गन्धे मत्त कर निरन्तर ॥
प्रिय शुक्लाम्बर ओहे नदीया-निवासी ।
मोरे घृणा करिले करिबे लोके हासि ॥
निरवधि एइ कर ठाकुर लोचन ।
गौराङ्ग-गुणेते येन डुबे मोर मन ॥
ओहे उत्सवानन्द बलि भूमिते लुटाये ।
देशे देशे फिरि येन गौर-गुण गेये ॥
श्रीपुरुषोत्तम रामदास देह एइ चाइ ।
गौर-गुणे मत्त ह'ये नाचिये वेडाइ ॥
ठाकुर मुकुन्द एइ करिते जुयाय ।
गौर-कथा यथा तथा थाकि दीन-प्राय ॥
ओहे श्रीपरमेश्वर दास देह एइ वर ।
गौर-गुण शुनि येन कान्दि निरन्तर ॥
अनन्त-आचार्य्य यदु-गाङ्गुली मङ्गल ।
घुचाओ यतेक आमार आछे अमङ्गल ॥
शिशु-कृष्णदास कृष्णदास-कविराज ।
रक्षा कर एइबार करिनु दुष्ट—काज ॥
ओहे श्रीनिवास नरोत्तम रामचन्द्र ।
गण सह कर दया मुञि अति मन्द ॥
कि बलिव ओहे गौर-प्रिय परिवार ।
नरहरि अनाथेर केह नाहि आर ॥
आत्मनिवेदन एइ करि मुञि स्तुति ।
दिने दिने स्फुरे येन संप्रार्थना इति ॥

इति श्रीलनरहरि-दास-विरचितसपार्षद-श्रीगौराङ्ग-बन्दनासमाप्त।

श्रीश्रीवैष्णव-बन्दना ।

श्रीकृष्णचैतन्य-नित्यानन्दे ना जानिया ।
निन्दनु वैष्णवगण मानुष बलिया ॥
सेइ अपराधे मुञि व्याधिग्रस्त हैनु ।
मने विचारिया एइ निरूपण कैनु ॥
निमाइ करिल कत पातकी उद्धार ।
परिणामे केन मोरे ना कैल निस्तार ॥
नाटशाला हइते यबे आइसेन फिरिया ।
शान्तिपुरे यान यबे भक्तगोष्ठी लैया ॥
सेइ काले दन्ते तृण धरि दूर हैते ।
निवेदिनु गौराङ्गेर चरण--पद्मेते ॥
पतित पावन-अवतार नाम से तोमार ।
जगाइ--माधाइ आदि करिले उद्धार ॥
ताहा हैते कोटिगुणे अपराधी आमि ।
अपराध क्षम प्रभु जगतेर स्वामी ॥
प्रभु आज्ञा दिला, अपराध श्रीवासेर स्थाने ।
अपराध हयेछे तोमार तार पड़ह चरणे ॥
प्रभुर आज्ञाय श्रीवासेर चरणे पड़िनु ।
श्रीवास-आगे से गौरेर आज्ञा समर्पिनु ॥
अपराध क्षमिला से आज्ञा दिला मोरे ।
पुरुषोत्तम--पदाश्रय कर गिया घरे ॥
वैष्णव--निन्दने तोमार एतेक दुर्गति ।
वैष्णव--बन्दना करि शुद्ध कर मति ॥

प्रभु--पादपद्म आमि मस्तके धरिया ।
आइलाम आरति चित्ते उल्लसित हिया ॥
वैष्णव गोसाञिर नाम-उद्देश-कारण ।
नाना क्षेत्र तीर्थ मुञि करिनु गमन ॥
यथा यथा याँर नाम शुनिनु श्रवणे ।
याँर याँर पाद-पद्म देखिनु नयने ॥
शास्त्रे वा याँहार नाम देखिनु शुनिनु ।
सर्व्व भक्तेर नाम-माला ग्रन्थन करिनु ॥
इथे अग्र पश्चात् मोर दोष ना लइबा ।
ठाकुर वैष्णव मोर सकलि क्षमिबा ॥
एक ब्रह्माण्डे हय चौद्द भुवन ।
ताहाते वैष्णवगण करिया यतन ॥
जातिर विचार नाइ वैष्णव-वर्णने ।
देवता असुर ऋषि सकलि समाने ॥
देवता गन्धर्व्व आदि मानुष आदि करि ।
इहाते वैष्णव येइ ताँरे नमस्करि ॥
पद्मपुराण आर श्रीभागवत-- मत ।
बन्दिब वैष्णव प्रभुर सम्प्रदायी यत ॥
यत यत हीन जाति उद्भवे वैष्णव ।
सबारे बन्दिब सबे जगत--दुर्लभ ॥
श्रीकृष्णचैतन्य-नित्यानन्द कृपामय ।
सर्व्व-अवतार-सर्व्वभक्तजनाश्रय ॥
पुलिन्द पुक्कश भील किरात यवने ।
आभीर कङ्क आदि करि सकलि समाने ॥
सुभोग शबर म्लेच्छ आदि करि यत ।
ब्रह्मा आदि चारि वेद सबार आराध्य ॥

आभीर राग

प्राण गोराचाँद मोर धन गोराचाँद ।
जगत बाँधिल गोरा पाति प्रेमफाँद ॥ध्रु॥
मिनति करिया तृण धरिया दशने ।
निवेदन करों गुरु-वैष्णव-चरणे ॥
श्रीकृष्णचैतन्य—नित्यानन्द-अवतारे ।
यतेक वैष्णव ताहा के कहिते पारे ॥
वैष्णव जानिते नारे देवेर शकति ।
मुञि कोन् छार हङ शिशु अल्पमति ॥
जिह्वार आरति आर मनेर वासना ।
तेञि से करिते चाहों वैष्णव-बन्दना ॥
ये किछु कहिये गुरु-वैष्णव प्रसादे ।
क्रम भङ्ग ना लइबे मोर अपराधे ॥
बन्दों शची जगन्नाथ मिश्र पुरन्दर !
याँहार नन्दन विश्वरूप विश्वम्भर ॥
बन्दना करिब विश्वरूप धन्य धन्य ।
चैतन्य-अग्रज नाम श्रीशङ्करारण्य ॥
बन्दिब से महाप्रभु श्रीकृष्णचैतन्य ।
पतितपावन अवतार धन्य धन्य ॥
बन्दों लक्ष्मी ठाकुरानी आर विष्णुप्रिया ।
गदाधर पण्डित गोसाञि बन्दना करिया ॥
बन्दों पद्मावती देवी हाड़ाइ पण्डित ।
याँर पुत्र नित्यानन्द अद्भुत-चरित ॥
दयार ठाकुर बन्दों प्रभु नित्यानन्द ।
याँहा हैते नाटे गीते सबार आनन्द ॥

वसुधा जान्हवा बन्दों दुइ ठाकुरानी ॥
याँर पुत्र वीरभद्र जगते वाखानि ॥
वीरभद्र गोसाञि बन्दिब सावधाने ।
सकल भुवन वश याँर आचरणे ॥
जान्हवार प्रिय बन्दों रामाइ गोसाञि ।
ये आनिल गौड़देशे कानाइ बलाइ ॥
यैछे वीरभद्र जानि तैछे श्रीरामाइ ।
जान्हवा मातार आज्ञा इथे आन नाइ ॥
श्रीगोपीजनवल्लभ बन्दिब यतने ।
अद्भुत चरित्र याँर ना याय वर्णने ॥
गोसाञि श्रीरामचन्द्र बन्दिब सादरे ।
जीव उद्धारिते यिहँ बहु गुण धरे ॥
गोसाञि श्रीरामकृष्ण बन्दों एकमने ।
याँहार अशेष गुण जगते वाखाने ॥
नित्यानन्द-सुता बन्दों गङ्गा ठाकुराणी ।
भुवन भरिया याँर सुयश वाखानि ॥
दयार ठाकुर बन्दों यतेक वैष्णव ।
याँदेर कृपाय पाइ श्रीराधामाधव ॥

भाटियारी राग

धन्य अवतार गोरा न्यासि-चूड़ामणि ।
एमन सुन्दर नाम कोथाओ ना शुनि ॥ध्रु॥
सावधाने बन्दिब श्रीमाधवेन्द्रपुरी ।
विष्णुभक्ति—पथेर प्रथम अवतरी ॥
आचार्य्य-गोसाञि बन्दों अद्वैत ईश्वर ।
ये आनिल महाप्रभु भुवन-भितर ॥

सीता ठाकुराणी बन्दों हञा एक मन ।
श्रीअच्युतानन्द बन्दों ताँहार नन्दन ॥
बन्दिव श्रीश्रीनिवास ठाकुर पण्डित ।
नारद खेयाति याँर भुवन-पूजित ॥
भक्ति करि बन्दिव मालिनी ठाकुराणी ।
श्रीमुखे गौराङ्ग याँरे बलिला जननी ॥
श्रीनारायणी देवी बन्दिव सावधाने ।
आलवाटी प्रभु याँरे बलिल आपने ॥
हरिदास ठाकुर बन्दों विरक्त—प्रधान ।
द्रव्य दिया शिशुरे लओयाइला हरिनाम ॥
गोपीनाथ ठाकुर बन्दों जगत-विख्यात
प्रभुर स्तुतिपाठे येइ ब्रह्मा साक्षात ॥
बन्दिव मुरारि गुप्त भक्तिशक्तिमन्त ।
पूर्व्वे अवतारे याँर नाम हनुमन्त ॥
श्रीचन्द्रशेखर बन्दों चन्द्र सुशीतल ।
आचार्य्यरत्न याँर ख्याति निरमल ॥
गोविन्द गरुड़ बन्दों महिमा अपार ।
गौरपदे भक्तिद्वारे याँर अधिकार ॥
बन्दिव अम्बष्ठ नाम श्रीमुकुन्द दत्त ।
गन्धर्व्व जिनिया याँर गानेर महत्त्व ॥
बासुदेव दत्त बन्दों बड़ शुद्धभावे ।
उत्कले याँहारे प्रभु राखिला समीपे ॥
बन्दों महा निरीह पण्डित दामोदर ।
पीताम्बर बन्दों ताँर ज्येष्ठ सहोदर ॥
बन्दों श्रीजगन्नाथ शङ्कर नारायण ।
बड़ उदासीन एइ भाइ पञ्चजन ॥

बन्दों महाशय चक्रबर्त्ती नीलाम्बर ।
प्रभुर भविष्य यिंह कहिला सत्वर ।
श्रीराम पण्डित बन्दों गुप्त नारायण ।
बन्दों गुरु विष्णु गङ्गादास सुदर्शन ॥
बन्दों सदाशिव आर श्रीगर्भ श्रीनिधि ।
बुद्धिमन्त खान बन्दों आर विद्यानिधि ॥
बन्दिव धार्म्मिक ब्रह्मचारी शुक्लाम्बर ।
प्रभु याँरे दिल निज प्रेमभक्ति वर ॥
नन्दन आचार्य्य बन्दों लेखक विजय ।
बन्दों रामदास कविचन्द्र महाशय ॥
बन्दों खोलावेचा-ख्याति पण्डित श्रीधर ।
प्रभु-सङ्गे याँर नित्य कौतुक कोन्दल ॥
बन्दों भिक्षु बनमाली पुत्रेर सहिते ।
प्रभुर प्रकाश ये देखिला आचम्बिते ॥
हलायुध ठाकुर बन्दों करिया आदर ।
बन्दना करिव श्रीवासुदेव भादर ॥
बन्दिव ईशानदास करयोड़ करि ।
शची ठाकुरानी याँरे स्नेह कैल बड़ि ॥
बन्दों जगदीश आर श्रीमान् सञ्जय ।
गरुड़ काशीश्वर बन्दों करिया विनय ॥
बन्दना करिव गङ्गादास कृष्णानन्द ।
श्रीराय मुकुन्द बन्दों करिया आनन्द ॥
बल्लभ आचार्य्य बन्दों जगजने जानि ।
याँर कन्या आपनि श्रीलक्ष्मी ठाकुरानी ॥
सनातन मिश्र बन्दों आनन्दित हैया ।
याँर कन्या धन्या ठाकुरानी विष्णुप्रिया ॥

आचार्य्य बनमाली बन्दों द्विज काशीनाथ ।
प्रभुर बिवाहे यिँह घटक साक्षात् ॥
प्रभुर बिवाहोत्सवे छिल यत जन ।
ताँ सबार पादपद्म बन्दि सर्व्वक्षण ॥

सुहइ राग—

भाल अवतार श्रीगोराङ्ग अवतार ।
ऐमन करुणानिधि कभु नाहि आर ॥ध्रु॥
गोसाञि ईश्वरपुरी बन्दों सावधाने ।
लोकशिक्षादीक्षा प्रभु कैल याँर स्थाने ॥
केशव भारती बन्दों सान्दीपनी मुनि ।
प्रभु याँरे न्यासी गुरु करिला आपनि ॥
बन्दिव श्रीरामचन्द्र—पुरीर चरण ।
प्रभु याँरे कहिलेन श्रीरामेर गण ॥
परमानन्दपुरी बन्दों उद्धव-स्वभाव ।
दामोदरपुरी बन्दों सत्यभामार भाव ॥
नरसिंहतार्थ बन्दों पुरी सुखानन्द ।
श्रीगोविन्दपुरी बन्दों पुरी ब्रह्मानन्द ॥
नृसिंहपुरी बन्दों सत्यानन्द भारती ।
बन्दिव गरुड़ अवधूत महामति ॥
विष्णुपुरी गोसाञि बन्दों करिया यतन ।
विष्णुभक्तिरत्नावली याँहार ग्रन्थन ॥
ब्रह्मानन्दस्वरूप बन्दों बड़ भक्ति करि ।
कृष्णानन्दपुरी बन्दों श्रीराघवपुरी ॥
विश्वेश्वरानन्द बन्दों बिश्वपरकाश ।
महाप्रभुर पदे याँर विशेष बिश्वास ॥

श्रीकेशवपुरी बन्दों अनुभवानन्द ।
बन्दिव भारती-शिष्य नाम चिदानन्द ॥
श्रीवंशीवदन बन्दों युडि दुइ कर ।
याँरे वंशी-अवतार कैला गदाधर ॥
गौराङ्गेर प्राणसम श्रीवंशीवदन ।
याँहार शरणे मिले चैतन्य-चरण ॥
बन्दों रूप सनातन दुइ महाशय ।
वृन्दावनभूमि दुहेँ करिला निर्णय ॥
श्रीजीव गोसाञि बन्दों सबार सम्मत ।
सिद्धान्त करिया ये राखिल भक्तितत्त्व ॥
रघुनाथदास बन्दों राधाकुण्डवासी ।
राघव गोसाञि बन्दों गोवर्द्धन-बिलासी ॥
बन्दिव गोपालभट्ट वृन्दावन-माझे ।
सनातन-रूप-सङ्गे सतत बिराजे ॥
रघुनाथभट्ट बन्दों प्रभुर आज्ञाते ।
वृन्दावने अध्यापक श्रीश्रीभागवते ॥
काशीश्वर गोसाञि बन्दों हञा एकमति ।
मथुरामण्डले याँर बिशेष खेयाति ।
शुद्ध सरस्वती बन्दों बड़ शुद्धमति ।
प्रभुर चरणे याँर बिशुद्ध भकति ॥
प्रबोधानन्द गोसाञि बन्दिब यतने ।
ये करिला महाप्रभुर गुणेर बर्णने ॥
लोकनाथ गोसाञि बन्दों भूगर्भ ठाकुर ।
दीनहीन लागि याँर करुणा प्रचुर ॥
जगदानन्द पण्डित बन्दों साक्षात् सरस्वती ।
प्रभु याँरे करिलेन परम पिरीति ॥

महा-अनुभव बन्दों पण्डित राघव ।
पाणिहाटी ग्रामे याँर प्रकाश वैभव ॥
पुरन्दर पण्डित बन्दों अङ्गद-विक्रम ।
सपरिवारे लाङ्गूल याँर देखिला ब्राह्मण ॥
काशीमिश्र बन्दों प्रभु याँहार आश्रमे ।
वाणीनाथ पट्टनायक बन्दिव सम्भ्रमे ॥
श्रीप्रद्युम्नमिश्र बन्दों राय भवानन्द ।
कलानिधि सुधानिधि गोपीनाथ बन्दों ॥
राय रामानन्द बन्दों बड़ अधिकारी ।
प्रभु याँरे लभिला दुर्ल्लभ ज्ञान करि ॥
वक्रेश्वर पण्डित बन्दों दिव्य-शरीर ।
अभ्यन्तरे कृष्णतेज गौराङ्ग बाहिर ॥
बन्दिव सुग्रीव-मिश्र श्रीगोविन्दानन्द ।
प्रभु लागि मानसिक याँर सेतुबन्ध ॥
सम्भ्रमे बन्दिव आर गदाधरदास ।
वृन्दावने अतिशय याँहार प्रकाश ॥
सदाशिव कविराज बन्दों एकमने ।
सकल वैष्णव वश यार प्रेमगुणे ॥
प्रेममय-तनु बन्दों सेन शिवानन्द ।
जाति प्राण धन याँर गौरापद-द्वन्द्व ॥
चैतन्यदास रामदास आर कर्णपूर ।
शिवानन्देर तिन पुत्र बन्दिव प्रचुर ॥
बन्दिव मुकुन्द-दत्त भावे शुद्धचित्त ।
मयूरेर पाखा देखि हइला मूर्च्छित ॥
प्रेमेर आलय बन्दों नरहरिदास ।
निरन्तर याँर चित्ते गौराङ्ग-बिलास ॥

मधुर-चरित्र बन्दों श्रीरघुनन्दन ।
आकृति प्रकृति याँर भुवन-मोहन ॥
सकल-महान्तप्रिय श्रीरघुनन्दन ।
निताइ दिलेन याँरे सुमाल्य चन्दन ॥
प्रेमसुखमय बन्दों कानाइ – ठाकुर ।
महाप्रभु दया याँरे करिला प्रचुर ॥
रघुनाथदास बन्दों प्रेमसुधामय ।
याँहार चरित्रे सब लोक वश हय ॥
आचार्य्य पुरन्दर बन्दों पण्डित देवानन्द ।
गौर-प्रेममय बन्दों श्रीआचार्य्यचन्द्र ॥
आकाइ हाटेर बन्दों कृष्णदास – ठाकुर ।
परमानन्द – पण्डित बन्दों सतीर्थ प्रभुर ॥
गोविन्द – घोष – ठाकुर बन्दों सावधाने ।
याँर नाम सार्थक प्रभु करिला आपने ॥
बन्दिव माधव घोष प्रभुर प्रीतिस्थान ।
प्रभु याँरे करिला अभ्यङ्ग-स्वरदान ॥
श्रीबासुदेव – घोष बन्दिव सावधाने ।
गौरगुण विना येइ अन्य नाहि जाने ॥
ठाकुर श्रीअभिराम बन्दिब सादरे ।
षोल-साङ्गेर काष्ठ येंहो वंशी करे धरे ॥
सुन्दरानन्द ठाकुर बन्दिव बड़ आशे ।
फुटाल कदम्बफुल जम्बीरेर गाछे ॥
परमेश्वरदास ठाकुर बन्दों सावधाने ।
शृगाले लओयान नाम संकीर्त्तन-स्थाने ॥
इष्टदेव बन्दों श्रीपुरुषोत्तम नाम ।
के कहिते पारे ताँर गुण अनुपाम ॥

सर्व्वगुणहीन ये ताहारे दया करे ।
आपनार सहज-करुणाशक्ति-बले ॥
सप्तम बत्सरे याँर श्रीकृष्ण-उन्माद ।
भुवनमोहन नृत्य शकति अगाध ॥
गौरीदास कीर्त्तनीयार केशेते धरिया ।
नित्यानन्द-स्तव कराइला शक्ति दिया ॥
गदाधरदास आर श्रीगोबिन्द घोष ।
याँहार प्रकाश देखि प्रभुर सन्तोष ॥
याँर अष्टोत्तरशत घट गङ्गाजले ।
अभिषेक सर्व्वज्ञाता हन शिशुकाले ॥
करवीर मञ्जरी आछिल याँर काने ।
पद्म-गन्ध हैल ताहा सवा विद्यमाने ॥
याँर नामे स्निग्ध हय वैष्णव सकल ।
मूर्त्तिमन्त प्रेमसुख याँर कलेवर ।
काला कृष्णदास बन्दों वड़ भक्ति करि ।
दिव्य उपवीत बस्त्र कृष्णतेजोधारी ॥
कमलाकर पिपलाई बन्दों भावविलासी ।
ये प्रभुरे बलिल लह वेत्र देह बाँशी ॥
रत्नाकरसुत बन्दों पुरुषोत्तम नाम ।
नदीया बसति याँर दिव्य-तेजोधाम ॥
उद्धारण दत्त बन्दों हञा सावहित ।
नित्यानन्द-सङ्गे वेड़ाइला सर्व्वतीर्थ ॥
गौरीदास पण्डित बन्दों प्रभुर आज्ञाकारी ।
आचार्य्य गोसाञिरे निल उत्कल-नगरी ॥
पुरुषोत्तम पण्डित बन्दों बिलासी सुजन ।
प्रभु याँरे दिला आचार्य्य-गोसाञिर स्थान ॥

बन्दिब सारङ्ग दास हञा एकमन ।
मकरध्वज – कर बन्दों प्रभुर गायन ॥
रुद्रारि कविराज बन्दों भागवताचार्य्य ।
श्रीमधु पण्डित बन्दों अनन्त आचार्य्य ॥
गोविन्द आचार्य्य बन्दों सर्व्वगुणशाली ।
ये करिल राधाकृष्णेर विचित्र धामाली ॥
सार्व्वभौम बन्दों बृहस्पतिर चरित्र ।
प्रभुर प्रकाशे याँर अद्भुत कवित्व ॥
बन्दिब प्रतापरुद्र इन्द्रद्युम्न-ख्याति ।
प्रकाशिला प्रभु याँरे षड़्भुज आकृति ॥
द्विज रघुनाथ बन्दों उड़िया बिप्रदास ।
अभिन्न अच्युत बन्दों आचार्य्य श्यामदास ॥
द्विज हरिदास बन्दों वैद्य विष्णुदास ।
याँर गीत शुनि प्रभुर अधिक उल्लास ॥
कानाइ खुटिया बन्दों बिश्व-परचार ।
जगन्नाथ बलराम दुइ पुत्र याँर ॥
बन्दों उड़िया बलराम दास महाशय ।
जगन्नाथ बलराम याँर बश हय ॥
जगन्नाथ दास बन्दों सङ्गीत-पण्डित ।
याँर गान-रसे जगन्नाथ विमोहित ॥
बन्दिब शिवानन्द पण्डित काशीश्वर ।
बन्दिब चन्दनेश्वर आर सिंहेश्वर ॥
बन्दिब सुबुद्धि–मिश्र मिश्र–श्रीश्रीनाथ ।
तुलसी-मिश्र बन्दों माहिती काशीनाथ ॥
श्रीहरिभट्ट बन्दों माहिती बलराम ।
बन्दों पट्टनायक माधव याँर नाम ॥

वसुवंश रामानन्द वन्दिव यतने ।
याँर वंशे गौर विना अन्य नाहि जाने ॥
बन्दिव पुरुषोत्तम नाम ब्रह्मचारी ।
श्रीमधु पण्डित वन्दोँ वड़ अधिकारी ॥
श्रीकर पण्डित बन्दोँ द्विज रामचन्द्र ।
सर्व्व सुखमय बन्दोँ यदु कविचन्द्र ॥
विलासी वैरागी बन्दोँ पण्डित धनञ्जय ।
सर्व्वस्व प्रभुरे दिया भाण्ड हाते लय ॥
जगन्नाथ पण्डित बन्दों आचार्य्य लक्ष्मण ।
श्रीकृष्ण पण्डित बन्दों बड़ शुद्धमन ॥
सूर्य्यदास पण्डित बन्दों विख्यात संसारे ।
वसुधा जाह्नवा दुइ कन्या याँर घरे ॥
मुरारि चैतन्यदास बन्दों सावधाने ।
आश्चर्य्य चरित्र याँर प्रह्लाद-समाने ॥
परमानन्द-गुप्त बन्दों सेन-जगन्नाथ ।
कविचन्द्र मुकुन्द बालक रमानाथ ॥
श्रीकंसारि सेन बन्दों सेन श्रीवल्लभ ।
भास्कर ठाकुर बन्दों बिश्वकर्म्मा अनुभव ॥
सङ्गीत-रचक बन्दों बलराम दास ।
नित्यानन्दचन्द्रे याँर सुदृढ़ बिश्वास ॥
महेश शण्ड बन्दों बड़इ उन्मादी ।
जगदीश पण्डित बन्दों नृत्यविनोदी ॥
नारायणीसुत बन्दों वृन्दावनदास ।
याँहार कवित्व गीत जगते प्रकाश ॥
बड़गाछिर बन्दिव ठाकुर कृष्णदास ।
प्रेमानन्द नित्यानन्दे याँहार बिश्वास ॥

परमानन्द अवधौत बन्दों एकमने ।
सर्व्वदा उन्मत्त यिंह बाह्य नाहि जाने ॥
वन्दिव से अनादि गङ्गादास पण्डित ।
यदुनाथ दास बन्दों मधुर-चरित ॥
पुरुषोत्तमपुरी बन्दों तीर्थ-जगन्नाथ ।
श्रीराम-तीर्थे बन्दों पुरी रघुनाथ ॥
बासुदेव तीर्थ बन्दों आश्रमी उपेन्द्र ।
बन्दिव अनन्तपुरी हरिहरानन्द ॥
मुकुन्द कविराज बन्दों निर्म्मल-चरित ।
बन्दिव आनन्दमय श्रीजीव पण्डित ॥
बन्दना करिव शिशु कृष्णदास नाम ।
प्रभुर पालने याँर दिव्य तेजोधाम ॥
माधव आचार्य्य बन्दों कवित्व शीतल ।
याँहार रचित गीत श्रीकृष्णमङ्गल ॥
गौरीदास पण्डितेर अनुज कृष्णदास ।
बन्दिव नृसिंह आर श्रीचैतन्यदास ॥
रघुनाथ भट्ट बन्दों करिया बिश्वास ।
बन्दों दिव्य-लोचन श्रीरामचन्द्र दास ॥
श्रीशङ्कर बन्दों बड़ अकिञ्चन-रीति ।
डम्फेर बाद्यते ये प्रभुर कैल प्रीति ॥
प्रेमानन्दमय बन्दों आचार्य्य माधव ।
भक्तिबले हैला गङ्गादेवीर बल्लभ ॥
नारायण पैड़ारि बन्दों चक्रबर्त्ती शिवानन्द ।
बन्दना करिते वैष्णवेर नाहि अन्त ॥
एइ अबतारे यत अशेष वैष्णव ।
कहने ना याय सबार अनन्त वैभव ॥

अनन्त वैष्णवगण अनन्त महिमा ।
हेन जन नाहि ये करिते पारे सीमा ॥
बन्दना करिते मोर कत आछे बुद्धि ।
वेदेह जानिते नारे वैष्णवेर शुद्धि ॥
सवाकार उपदेष्टा वैष्णव ठाकुर ।
श्रवण—नयन—मन—वचनेर दूर ॥
शरण लइया भज वैष्णव—चरणे ।
संक्षेपे कहिल किछु वैष्णव—बन्दने ॥
वैष्णव—वन्दना पड़े शुने येइ जन ।
अन्तरेर मल घुचे शुद्ध हय मन ॥
प्रभाते उठिया पड़े वैष्णव—बन्दना ।
कोन काले नाहि पाय कोनइ यन्त्रणा ॥
देवेर दुर्लभ सेइ प्रेमभक्ति लभे ।
देवकीनन्दन दास कहे एइ लोभे ॥

इति श्रीश्रीवैष्णव-वन्दना समाप्त ।

श्रीभक्तनामावली

❀ श्रीराधानवगोविन्ददेवौ जयतः ❀

दोहा-प्रनमहुँ नव गोविन्द नव राधा कुवरि अनूप ।
नवद्वीप मधि नित लसैं गोर गदाधर रूप ॥१॥
नित्यानँद चैतन्य वपु राम कृष्ण शशि सूर ।
वृन्दावन अंतर सुवन लसैं तिमिर करि दूर ॥२॥

सोरठा-जग मधि संत अनंत अंत न होइ अनन्त मुख ।
को वरने बुधिवंत विन प्रसाद सियकंत के ॥३॥
मूक होंइ वाचाल गिरिवर लांघै पंगु जहँ ।
अस मम नाथ कृपाल सीतापति अद्वैतवर ॥४॥
दुरगम सुगम सुहोय दुस्कर निकर सुकर जहँ ।
अस मम प्रभु मद जोय दुर्घट घटन समर्थ वर ॥५॥
इनके पद चित लाइ मति अनुसार सुमंद मति ।
रच्यौ चहतु भरि चाह हरिवल्लभ नामावली ॥६॥
दोहा-नित्यानंद चैतन्य के भ्राजहि अनगन संत ।
अनुरागी सुठि अमल मति वड भागी रसवंत ॥७॥
एक एक के चरित जिमि सुर सरिता सतधार ।
कन परसत जाके नसैं कलि कलमष निरधार ॥८॥
ताहू मैं पुन देखियतु कछु परगट कछु गूढ़ ।
जिहि वरनत में होइ अति सुरगुरु की मति मूढ़ ॥९॥
तिहि वरनन हित जास के बाढै चित महि चाइ ।
जिमि बालक अति मुग्धमति निरखि चंद ललचाइ ॥१०॥
सुर प्रसाद अभ्यास सुठि अरु वितपति सुख साज ।
कारन काव्य सुकहत हैं जाहि सुमित कविराज ॥११॥
सो संतनि के चिगत मत जातें लौकिक रीति ।
काज अलोकिक माँहि पुन कारण लोकातीति ॥१२॥
हरि गुरु हरिजन तत्व सम मम परभाव सुतीन ।
तिह वरनन महि होंइ पुन जे प्रवीन रसलीन ॥१३॥
हरि गुरु हरिवल्लभ कृपा कारन सुठि तहँ जोइ ।
कारन लोकातीत विनु वरन फुरै नहि कोइ ॥१४॥
हरिवल्लभ परसाद वल सुखद देवकीनन्द ।
रची सु वैष्णवबंदना सरस सुरस सुखकंद ॥१५॥

ताकौं संतनिदेश पुन संतनि हित बिन खेद ।
रचत भक्त नामावली ग्रन्थ जु भाषा भेद ।।१६।।
सोरठा-नमहुँ गौरवरचन्द नित्यानंद आनंद भरि ।
सम करुना रस कन्द पूरन परमानंद वपु ।।१७।।
जे परिकर सुख रूप चारु अमित अवतार गत ।
तिन के सरन सरूप भ्राजहिँ परम अनूप जू ।।१८।।
दोहा-नमहुँ सची पुन मिश्रवर जगन्नाथ सुखकंद ।
विश्वरूप स्वरूप अरु गौरचंद जिहिँ नंद ।।१९।।
अति अनन्य गति जाचि हौं विश्वरूप पद धन्य ।
अग्रज श्री चैतन्य सुभ नाम संकरारन्य ।।२०।।
नमहु कृष्णचैतन्य प्रभु करि विनती जु अपार ।
अगम निगम दुर्गम प्रकट करुणालय अवतार ।।२१।।
लछमी पद रज जाचि हौं विष्णुप्रिया गुन गाइ ।
सुघर गदाधर पंडित हि सीस नाइ भरि भाइ ।।२२।।
पद्मावति पद बरनिहौं द्विजवर बहुरि मुकुंद ।
जिहि सुत जगदानंद कर भ्राजत नित्यानंद ।।२३।।
प्रणम हुँ नित्यानंद प्रभु नित्यानन्द सरुप ।
पतितनि के गति रूप अति प्रगट प्रभाव अनूप ।।२४।।
प्रणम हुँ वसुधा जान्हवी वीरचन्द जिहिं नन्द ।
वीरचंद पुन बरनि हौं द्युति अमंद रसकंद ।।२५।।
परमादर प्रणम हुँ पुरी माधवेंद्र रसरास ।
दुरी भक्ति भगवंत की जिन कीनी परकास ।।२६।।
श्री अद्वैत सुईस पद रज धरिहौं निज सीस ।
जिन लायौ ईहि जगत मांहि गौर धाम जगदीस ।।२७।।
सिय चरननि सिर नाइ हौं ह्वै हरषित भरि भाइ ।
श्रीअच्युत पद पंकज हि मन मधुकर सरसाइ ।।२८।।

श्री निवास पंडित नम हुँ श्री निवास प्रियदास ।
प्रेमरासि अति जाल को जिम नारद परकास ।।२९।।
ह्वै पुलकित पुन बरनि हौं मालिनि हरसित काय ।
हरषि हरषि जिहि गौरहरि कही मात सुत भाय ।।३०।।
सोरठा-प्रभु वत्सल रसभोय जाहि आलवाटी बदत ।
बड़ भगिनी जग जोय नमहुँ नाम नारायणी ।।३१।।
उदासीन सिरमौर हरिवल्लभ हरिदास वर ।
रटत बाल हित कीर हरषि नाम हरिदेव जहँ ।।३२।।
दोहा-बरन हुँ गोपीनाथ पद नमित माथ भरि चाव ।
प्रभु अस्तुति महि चतुरवर चतुरानन परभाव ।।३३।।
भक्ति सक्तिधारी नमहुँ गुपत मुरारि प्रकास ।
हनूमान अनुमानियें रामचन्द्र पद दास ।।३४।।
बरनहुँ सेघर चँद पद चित चकोर सरसाय ।
श्री आचारज रत्न कौं हिय संपुट महि लाय ।।३५।।
प्रनम हुँ श्रीगोविन्द वर वैनतेय परभाव ।
गौरधाम अभिराम पद प्रीति रीति अति चाव ।।३६।।
चाय भाय चित लाय पुन बरन हुँ दत्त मुकुन्द ।
गान कला गंधर्व जिमि सरस सुरस सुखकन्द ।।३७।।
वासुदेव हिय महि लसऊ दत्तवंश कुलदीप ।
उत्कल महि श्री गौरवर राखे चरन समीप ।।३८।।
दामोदर पण्डित नमहूँ वर पीतांबर संग ।
जगन्नाथ संकर बहुरि नारायण भरि रंग ।।३९।।
तजि असार संसार रति प्रभु चरननि मति सांच ।
उदासीन परवीन ए भ्राजहिं भ्रात सुपांच ।।४०।।
श्री नीलांबर चकवै त्रिकालज्ञ सुख राम ।
हौंन हार प्रभु चरित लै जिन कीनौ परकास ।।४१।।

नमहुँ रामश्री गुपतवर नारायण अभिराम ।
विष्णु गंग भरि रंग पुन दास सुदरसन नाम ॥४२॥
नमहुँ सदासिव श्रीगरभ श्रीनिधि अरु बुधिवंत ।
खान विदित रसखानि पुन विद्यानिधि सुठि सत ॥४३॥
बहुरि ब्रह्मचारी नमहुँ शुक्लांवर करि नेम ।
जिहि वर दीनौ गौरवर प्रेमभक्ति भरि प्रेम ॥४४॥
नंदन आचारज नमहुँ लेखक विजै महंत ।
लिखि लिखि दीने हैं प्रभुहिं अमित ग्रंथ रसवंत ॥४५॥
रामचंद कविचंद अरु श्रीधर जग परकास ।
जिहि प्रभु संग सुरंग भरि नाचत करि परिहास ॥४६॥
भिक्षुक वनमाली बहुरि गुनसाली तिहि नंद ।
प्रभु पर भाव सुचाव भरि जिन देख्यौ सुख कंद ॥४७॥
नाम हलायुध धाम सुख नित बरन हुँ भरि भाय ।
वासुदेव भादर बहुरि अति आदर सरसाय ॥४८॥
सो०-सानुराग जुरि पानि श्री ईसान वरनि हौं ।
सची दास निज जानि नेह रासि कीनी सुजहिँ ॥४६॥
दोहा-सीस नाइ जगदीस पद श्रीमान हि सनमानि ।
प्रनमहुँ कासीस्वर गरुड संजय जुरि जुग पानि ॥५०॥
गोंगदास रसकंद अरु वरनहुँ कृष्णानंद ।
नित स्वछंद मति जाचिहौं पदरज राय मुकंद ॥५१॥
आचारज वल्लभ नमहुँ दुर्लभ जिनकी रीति ।
जिहि तनु जासुठि सिधुजा लोकरीति परतीति ॥५२॥
नमहुँ सनातन मिश्रवर नम वच आठौं जाम ।
जिहि कन्या धन्या विदित विष्णुप्रिया प्रिय नाम ॥५३॥
वनमाली आचारज रु कासीपति द्विजराज ।
प्रभु विवाह उत्साह महि घटकराज सुखसाज ॥५४॥

पुरीजु ईश्वर वरनि हौं प्रेमरीति भरि प्रीति ।
लीनी दिख्या गौरवर सिख्या लोक प्रतीति ॥५५॥
वरन हुँ कैसौ भारती सांदीपन सुखरास ।
गुरु गौरव श्री गौरवर कीनौ जाहि प्रकास ॥५६॥
पुरी रामचंद हिं रटत घटत अघट हिय पीर ।
कहे गौरवर धीर जहिं नाहि न गन रघुवीर ॥५७॥
पुरी सुपरमानन्द सुठि ऊधो माधो मीत ।
पुरी जु दामोदर नमहुँ सतभाभा परतीति ॥५८॥
तीरथ वर नरसिंघ श्री ब्रह्मानन्द प्रवीन ।
सुखानन्द गोविंद पुनि वरन हुँ पुरी सुतीन ॥५६॥
सत्यानन्द सुभारती अरु नरसिंहानन्द ।
मति विसाल अवधूत वर गरुड़ नाम सुखकंद ॥६०॥
विष्णुपुरी पद वरनि हौं विष्णुभक्ति रसरूप ।
विष्णुभक्ति रतनावली जिहि उर लसत अनूप ॥६१॥
ब्रह्मानन्द स्वरूप अरु कृष्णानन्द अनूप ।
पुरी राघवानन्द पुन भक्त भूप रस रूप ॥६२॥
विश्व विदित गुन वरनिहौं विश्वेश्वर सुठि रीति ।
गौरधाम अभिराम पद प्रीति रीति परतीति ॥६३॥
पुरी जु केसो वरनि हौं विदित अनुभवानन्द ।
नमहुँ भारती सिष्यवर चिदानन्द सुखकन्द ॥६४॥
रूप सनातन वरनि हौं जानि सनातन रूप ।
झुमि प्रेम व्रज-भूमि महि जिनकौ निलय अनूप ॥६५॥
बहुरि नमहुँ श्री जीवपद करि निहचै एकांत ।
भक्ति तत्व राखे सुकरि श्रुति सम्मत सिद्धान्त ॥६६॥
दास विदित रघुनाथ अरु राघो पद जिय आस ।
राधासर गिरिवर प्रगट नित जिहि वास विलास ॥६७॥

नमहुँ भट्टगोपाल पद अति उमंग भरि रंग ।
बृन्दावन मधि नित लसैं रूप सनातन संग ॥६८॥
लोकनाथ पंद वरनिहौं करि विनती निज माथ ।
प्रनम हुँ श्री भूगर्भ पुनि दीन जननि के नाथ ॥६६॥
गुन अनंत पुन वरनि हौं श्री कासीस्वर संत ।
ब्रजमंडल महि जासके परचै रास अनंत ॥७०॥
वहुरि नमहुँ अति सुद्धमति सरस्वती सुठि सुद्ध ।
प्रभु चरननि महि जास कौ प्रगट प्रेम अविरुद्ध ॥७१॥
नमहुँ प्रबोधानंद वर करि रति मति सुअनन्य ।
वरन्यो श्रीचैतन्य कौ विमल चरित अति धन्य ॥७२॥
प्रगट भट्ट रघुनाथ पद वरनहुँ हिय हरपाँहि ।
कथिया श्री भागौत कौ श्रीवृंदावन माँहि ॥७३॥
वांनी सुखदानी मनहु पण्डित जगदानंद ।
गौरकृपा को पर विदित प्रेम रास सुखकंद ॥७४॥
पनिहाटी वासी नमहुँ सेखरासी भरि चाव ।
पंडित राघो जानि अरु मानि अमित परभाव ॥७५॥
सो०-प्रवल वलीसुत वाल नमहुँ पुरन्दर पंडित हि ।
निरखत पूंछ विसाल लै निजगन द्विज चकित ह्वै ॥७६॥
दो०-मिश्र वंश परसंस महि कासी पद चित लाय ।
वरन हुँ वानीनाथ पुन सुठि पट नाइक गाय ॥७७॥
अधिकारी भारी नमहुँ रामानंद सु राय ।
ज्ञानसु लीनो गौरवर दुर्लभ वल्लभ भाय ॥७८॥
पंडित वक्रेस्वर नमहुँ दिपत अलौकिक रूप ।
गौर स्याम दुघरयौ दुरयौ दुर्गम भेव अनूप ॥७९॥
नाय ग्रीव सुग्रीव पद अरु गोविन्दानन्द ।
गौरचन्द हित मानसी रच्यौ सेतु सुखकन्द ॥८०॥

दास वंश नभ चन्द्रवर उदित गदाधर नाम ।
श्रीवृन्दावन धाम मधि जिहि विलास अभिराम ॥८१॥
सदा सदाशिव गायहौं सुठि कविराज प्रकाश ।
प्रेम पास महि जास के सुदृढ़ बंधे हरिदास ॥८२॥
प्रेम गैन वर सैंन श्रीसिवानंद पद जोय ।
कुल कांन रु धन प्रान जिहि गौरचंद पद दोय ॥८३॥
सो०-नाहिन देख्यौ कोय प्रेमी परम मुकुन्द सम ।
गिरयौ मूरछित होय मोर पुच्छ लखि स्वच्छ मति ॥८४॥
दो०-प्रेम सुधारस रास वपु नम हुँ नरहरिदास ।
जिहि अन्तरनभ महि सदा गौर चंद परकास ॥८५॥
जग वंदन पद वरनि हौं रघुनन्दन भरिचाय ।
भक्त भूप सुठि रूप अरु सीतल मत सब काय ॥८६॥
कन्हाई ठाकुर नमौं प्रेमानन्द स्वरूप ।
करी महा प्रभु दयानिधि जिहि पै दया अनूप ॥८७॥
रघुनाथ दास वन्द हुँ जु प्रेम सुधा की रासि ।
जिनके चरितन वस्य सब होहि जगत के वासि ॥८८॥
नमौं पुरन्दराचार्य्य अरु पण्डित देवानन्द ।
गौर प्रेम की राशि जो श्रीआचारज चन्द ॥८६॥
कृष्णदास ठाकुर नमौं हाट अकाई वास ।
सह वासी प्रभुके नमहुँ परमानँद सुख रासि ॥६०॥
सावधान ह्वै कैं नमहुँ ठाकुर गोविंद घोष ।
नाम सार्थक कियो प्रभु करि संकीरतन पोप ॥६१॥
वन्दहुँ माधव घोप जो श्री प्रभु प्रीति निवास ।
दान कियौ चैतन्य प्रभु जिहि अभंग स्वर रासि ॥६२॥
वासुदेव घोप वन्दों सावधान थिर भाव ।
नहीं गौरगुण राशि विनु और जासु चित भाव ॥६३॥

अति आदर वन्दन करहुँ ठाकुर श्री अभिराम ।
सोलह सांग की लाकरी जिन कर वेनु ललाम ॥९४॥
ठाकुर सुँदरानन्द कों वंदहु करि बड़ि आश ।
जिन जामुन तरु में करे कदम पुष्प परकाश ॥९५॥
परमेश्वर ठाकुर नमों सावधान चित लाई ।
नाम लिवाय श्रृगाल जिन कीरतन मधि लाइ ॥९६॥
श्री पुरुषोत्तम नाम जो इष्टदेव शिव जानि ।
वन्दों तिनके पद कमल को वरनें गुण खानि ॥९७॥
गुण विहिन जे सबहिं विधि अहें पतित निरधार ।
सहज कृपा निज शक्ति बल तिन पें दया अपार ॥९८॥
बरस सात मधि गात जब उनमादी हरिरूप ।
जगमन भावन नृत्य अरु सक्ति अगाध अनूप ॥९९॥
गाइक गौरीदास कों हठसु गहत कच पास ।
कीनी नित्यानन्द की अस्तुति रासि प्रकास ॥१००॥
घोष विदित गोविंद अरु सघर गदाधरदास ।
दर्पि रहे जुग संत जहँ निरखि अमित परकास ॥१०१॥
घट अष्टोत्तर सत अघट प्रगट सुरसरी नीर ।
जिमि अभिसेक विसेषियै त्रिकालज्ञ सिसुधीर ॥१०२॥
धरी मंजरी ही दगी जिहि कान निजु कनेर ।
जलज वास जलपत भयौ मधि विदमान घनेर ॥१०३॥
रटत नाम सुख धाम तिहि संतनि बढ़त हुलास ।
मूरति वंत प्रकास वपु प्रेम सुधारस रास ॥१०४॥
करि भक्ति बड़ि वंदौं मैं कारौ कृष्ण सुदास ।
सुत रत्नाकर गुननि कर पुरुषोत्तम परकास ॥१०५॥
धरि धीरज हिय धारि हौं दशा उधारन नाम ।
नंगी नित्यानन्द वर तीरथ महि अभिराम ॥१०६॥

पंडित गौरी गाइ हौं दास विदित भरि रंग ।
पण्डित पुरुषोत्तम नमहुँ बहुरि दास सारंग ॥१०७॥
आचारज भागोत श्री पंडित मधु सुख साज ।
मकर ध्वज कर गाइ हौं बहुरि मिश्र कविराज ॥१०८॥
श्रीअनंत गोविन्द जुग आचारज निरधार ।
पिय प्यारी की जिनि रचो मची कारी जु धमार ॥१०९॥
सारवभौम हि वरनि हौं करि सुरगुरु पद आस ।
प्रभु प्रकास महि जास कौ विदित कवित रस रास ॥११०॥
सुरपति भाय जु गाय हौं रुद्र प्रताप अनूप ।
जहँ करुना कर गौर प्रभु प्रगटे षट भुज रूप ॥१११॥
नाइ माथ जुरि हाथ पुनि बरन हुं द्विज रघुनाथ ।
विप्रदास हरिदास द्विज वैद्य विष्णु पुन साथ ॥११२॥
गान कला महि जास कौ प्रभु कौ बहु उल्लास ।
द्विज हरिदास कौ बन्दौं वैद्य जू विष्णुदास ॥११ ॥
खुँटिया करि परचार जग नाम कन्हाइ धीर ।
जिहि सुत जुग अभिराम ए जगन्नाथ बलवीर ॥११४॥
उत्कल वासी वरनि हौं सुखरासी बलराम ।
जगन्नाथ बलराम कौ जासौं हित अति जान ॥११५॥
जगन्नाथ सुठि दास पद रज धरि हौं निज सीस ।
गानकला महि जास के धुनत सीस जगदीस ॥११६॥
सिवानन्द पण्डित नमहुँ कासीस्वर गुन गाय ।
नमहुँ चन्दनेस्वर बहुरि सिहेस्वर उर लाय ॥११७॥
नम कविराज श्रीनाथ हूँ प्रगट मिश्रवर दोय ।
प्रणमहु तुलसी मिश्र अरु मँहती कासी जोय ॥११८॥
हरीभट्ट अभिराम अरु मँहती श्री बलराम ।
पट नाइक सुखधाम पुन बरनहुं माधोनाम ॥११९॥

बसू वंश अति धन्य महि रातानन्द अनन्य ।
जिहि कुलदेव सुदेव वर विदित सीरि चैतन्य ॥१२०॥
नमहुँ ब्रह्मचारी परम पुरुषोत्ताम सुमहंत ।
गुन अनन्त पुन संतवर मधु पंडित रसवन्त ॥१२१॥
पंडित श्रीकर गाय हौं रामचन्द द्विज राय ।
रसनिकेत कविचन्द जदु करि सुचित हिय लाय ॥१२२॥
संत विलासी पंडितहि नमहुँ धनञ्जय नाम ।
दै सरवशु प्रभु पाय जिहि करवा अभिराम ॥१२३॥
जगन्नाथ पंडित बहुरि कृष्णदास पद आस ।
आचारज लछमन नमहुँ भक्त भूप परकास ॥१२४॥
सो०-दास बिदित जग जोय सूरज पंडित बरनि हौं ।
प्रगट सुता जिहि दोय सुठि वसुधा अरु जान्हवी ॥१२५॥
दो०-श्री मुरारि चैतन्य पद प्रनमहुँ भरि अहलाद ।
चरित रास पुन जास के अचरज सम प्रहलाद ॥१२६॥
परमानंद सुगुपत अरु जगन्नाथ बर सेन ।
बालक राम मुकुन्द कविचंद नमहुँ रस एन ॥१२७॥
कंसारि वल्लभ दास के सुक सेंन जुग संत ।
नमहुँ भक्त वर भासकर विसकरमा गुनवंत ॥१२८॥
दास नाम बलराम अति कोविद रस संगीत ।
नित्यानँद पद कमल माँहि अति पिरीति परतीति ॥१२९॥
महेस जगदीश वन्दौं पढ़त बढ़त मन मोद ।
पण्डित जुग मंडित सु एकम उनमाद विनोद ॥१३०॥
प्रनम हुँ सुत नारायणी श्री वृन्दावन दास ।
नृत्य गान अति जास कौ कीनौ जग परकाश ॥१३१॥
बड़गाछी वासी नम हुँ कृष्णदास जन भूप ।
नित्यानंद सरूप पद जुग जिहि जीवन रूप ॥१३२॥

उनमादी अवधूत वर प्रणम हुँ परमानन्द ।
गंगादास पण्डित नम हुँ विदित अनादि अमन्द ॥१३३॥
श्रीजदुनाथहि गाय हौं सांदल सील सुभाय ।
जगन्नाथ पुरुषोत्ताम महि तीरथजु पुरी नाम ॥१३४॥
पुरी नाम रघुनाथ अरु तीरथ वर श्री राम ।
वासुदेव तीरथ नम हुँ विष्णुभक्ति रसधाम ॥१३५॥
बहुरि चैंन हित वरनि हौं चारु चरित दिन रैंन ।
श्री उपेन्द्र आश्रम सुखद वर करुणा रस ऐंन ॥१३६॥
पुरी अनन्त हि वरनि हौं हरषि हरिहरानन्द ।
विमल चरित कविराज अरु कुमुद नाम रसकन्द ॥१३७॥
पण्डितबर श्री जीव अरु कृष्णदास सिसु नाम ।
पालक नित्यानन्द जिहि तेज पुंज सुख धाम ॥१३८॥
आचारज रसधाम पुन वरन हुँ माधो नाम ।
अमल कृष्ण मङ्गल रचित ग्रन्थ सु जिहि अभिराम ॥१३९॥
पण्डित गौरी अनुज श्रीकृष्णदास रस रास ।
श्रीनृसिंह चैतन्य सुठि दास विदित हरिदास ॥१४०॥
वरन हुँ सङ्कर घोष अति निहकिंचन निरदोष ।
डफहि बजावत सुघर वर कीनौ प्रभु कौ तोष ॥१४१॥
माधौ आचारज नम हुँ जुरि जुग कर निज माथ ।
प्रगट प्रेम बल मति विमल गङ्गादेवी नाथ ॥१४२॥
परिहारी भारी नम हुँ नारायण जु अनूप ।
भक्त भूप पुन चक्रवै सिवानन्द रस रूप ॥१४३॥
अनगन गनपति जो कहूँ जुरि बैठैं इक साथ ।
एक एक के जो कहूँ प्रगटैं अनगन हाथ ॥१४४॥
हाथ हाथ मैं जौ कहूँ अनगन लिखन धरन्त ।
अनगन प्रभु परिवार कौ क्यौं हूँ मिलै न अन्त ॥१४५॥

अनगन प्रभु परिकर निकर जानि सर्यानि निज ईस।
ठांनि दीनतर सबनि कौं इकठाँ नायौं सीस ॥१४
कहे सु जे जे नाम पुन मुखियनि के भरि रङ्ग ।
कछुक सचे क्रम सङ्ग अरु कछुक रचे क्रम भंग ॥१४
जान सबनि सम महिम अरु मांनि काव्य अनुरोध।
लघु गुरु के क्रम भंग तैं सुमति करहु जिनि क्रोध ।.१४
लघु गुरु हरिबल्लभ प्रगट सम प्रभाव सुखकन्द ।
जिम तुलसी दल सुठि विमल बहुरि गन्ड की नँद ॥१४
अगतिनि के गति जगतपति करुनालय भगवान ।
भक्त विमुख मुख निरखि पुन तुरत धरहि करकांन॥१५
अघट प्रतिज्ञा सुरसुरी प्रगट करी भरि रंग ।
हरिबल्लभ दोषी बिना तारहुँ कीट पतंग ॥१५
भक्त विमुख कौ भक्त बिन नाहिन रछक कोय ।
अम्बरीष आख्यान महि दुरवासा रिषि जोय ॥१५
भक्त बड़ाई सुनत में सकृत करैं उपहास ।
सुकृत रासि को नास अरु गर्भवास कौ त्रास ॥१५
भक्त बिना भगवन्त की भक्ति करहु किन टेर ।
उवट बटोही ग्राम के क्यों हूँ ढरैं न नेर ॥१५
बिन हरिवल्लभ हरिकृपा चाहत अति मति मूढ़ ।
देवकीनन्दन सो रची यौं बँदना अति गूढ़ ॥१५
वृन्दावनदास मोकौं भयो प्रभु कौ निदेस ।
ताकी ब्रजभाषा रचां कुंज भ्रमर सुख देस ।.१५

इति श्रीवृन्दावनदास विरचित वैष्णववन्दना

श्रीश्रीवैष्णवाभिधानम्

प्रणम्यादौ कृपादृष्टि-पवित्रीकृत-भूतलम् ।
सर्व्ववाञ्छा-कल्पतरुं गुरुं श्रीपुरुषोत्तमम् ॥
महौजसो महाभागान् महापतित-पावनान् ।
महाभागवतान सर्व्वान वैष्णवान् विष्णुरूपिणः ॥
ततः शची-जगन्नाथौ ख्यातौ भूदेव-रूपिणौ ।
श्रीविश्वरूप-श्रीविश्वम्भरयोः पितरौ शुभौ ॥
धन्यं श्रीकृष्णचैतन्य-चन्द्रस्याग्रज-रूपिणम् ।
शङ्करारण्य-नामानं विश्वरूप-महाशयम् ॥
गदाधर-प्राणनाथं लक्ष्मी-विष्णुप्रिया-पतिम् ।
साक्षात्-प्रेमकृपामूर्त्तिं श्रीचैतन्य-महाप्रभुम् ॥
तथा पद्मावती-श्रीमन्मुकुन्दौ द्विज-सत्तमौ ।
नित्यानन्द-स्वरूपस्य पितरावतुल-श्रियौ ॥
श्रीमन्नित्यानन्द-चन्द्रं वसुधा-जाह्नवी-पतिम् ।
श्रीवीरभद्र-जनकं सर्व्व-पाषण्ड-खण्डनम् ॥
यद्यपि प्रकृति-क्षुद्रोऽबुद्धिमान् बालकः स्वयम् ।
अनन्त-वैष्णवानन्त-महिमाख्यान-वालिशः ॥
तथापि रसना-लौल्यादत्यन्तान्तः कुतूहलात् ।
करोमि वैष्णवानन्ताभिधानं स्मरणं कियत् ॥
किन्त्वत्र मम हीनस्य सर्व्वेष्वेतन्निवेदनम् ।
क्रम-भङ्ग-भवा दोषा न ग्राह्यास्तैर्गुणोदयैः ॥
श्रीमाधव-पुरी श्रीलाद्वैताचार्य्यस्तथाच्युतः ।
गोपीनाथः श्रीनिवासो गोविन्दश्चन्द्रशेखरः ॥

हरिदासः श्रीमुरारि-गुप्तो नारायणस्तथा ।
मुकुन्दो वासुदेवश्च श्रीदामोदर-पण्डितः ॥
पीताम्बरो जगन्नाथः श्रीनारायण-शङ्करौ ।
श्रीराम-पण्डितश्चक्रवर्त्ति-नीलाम्बरस्तथा ॥
गङ्गादासो द्विजो विष्णुः श्रीसुदर्शन-पण्डितः ।
विद्यानिधिस्तथा बुद्धिमन्तः श्रील-सदाशिवः ॥
श्रीगर्भः श्रीनिधिः शुक्लाम्बरः श्रीधर-पण्डितः ।
कविचन्द्रो रामदासो वनमाली हलायुधः ॥
विजयो नकुलाचार्य्य ईशानो गरुड़ध्वजः ।
जगदीशः सञ्जयश्च श्रीमान् काशीश्वरस्तथा ॥
गङ्गादासो बासुदेव-भद्रो राम-मुकुन्दको ।
श्रीवल्लभाचार्य्य-वर्य्यो मिश्रः श्रील-सनातनः ॥
आचार्य्य-बनमाली च काशीनाथ-द्विजोत्तमः ।
ईश्वराभिधान-पुरी श्रीमत्केशव-भारती ॥
परमानन्दाख्य-पुरी दामोदर-स्वरूपकः ।
नरसिंहाख्यान-तीर्थो रामचन्द्र-पुरी तथा ॥
ब्रह्मानन्द-पुरी चैव श्रीसत्यानन्द-भारती ।
श्रीमत्सुखानन्द-पुरी श्रीगोबिन्द-पुरी तथा ॥
गरुड़ावधूत-देवः पुरी राघव-संज्ञकः ।
ब्रह्मानन्द-स्वरूपश्च पुरी श्रीयुत-केशवः ॥
श्रीमद्विष्णु-पुरी विश्वेश्वरानन्द-महाशयः ।
श्रीमच्चिदानन्दनामाऽनुभवानन्द एव च ॥
श्रीमत्कृष्णानन्द-पुरी नृसिंहानन्द-भारती ।
काशीश्वराख्यान-देवोऽनुपामः श्रीसनातनः ॥
रूपो जीवः श्रीप्रबोधानन्दः शुद्ध-सरस्वती ।
रघुनाथ-दास-नामा तथा गोपाल-भट्टकः ॥

रघुनाथो लोकनाथः श्रीमद्भूगर्भ-नामकः ।
राघवो जगदानन्द-पण्डितः श्रीपुरन्दरः ॥
काशीमिश्रो राय-रामानन्दो बक्रेश्वरो द्विजः ।
वाणीनाथ-पट्टनायो गोबिन्दानन्द एव च ॥
सदाशिव-कविदमाभृद्दासवंश-गदाधरः ।
श्रीशिवानन्द-सेनश्च श्रीमुकुन्द-भिषग्वरः ॥
श्रीमन्नरहरिः श्रील-रघुनन्दन एव च ।
रघुनाथ-दास-वैद्योपाध्याय-मधुसूदनो ॥
देवानन्द-द्विजवरः श्रीलाचार्य्य-पुरन्दरः ।
श्रीयुक्ताचार्य्यचन्द्रश्च श्रीकृष्णदास-पण्डितः ॥
सतीर्थ-परमानन्दः श्रीमत्-सूत्रिधरस्तथा ।
गोविन्दो माधवो बासुदेवो घोषाभिधानभृत् ॥
श्रील-श्रीरामदासः श्रीसुन्दरानन्द एव च ।
श्रीपरमेश्वरः श्रीमत्-पुरुषोत्तम एव च ॥
श्रीकृष्णदासः श्रीगौरीदासः श्रीकमलाकरः ।
वंशीगीत-प्रकाशी श्रीवंशीवदन-दासकः ॥
श्रीमदुद्धरण—श्रीलद्विजश्रीपुरुषोत्तमौ ।
कविराज-मिश्रवर्य्यो मधुसूदन-पण्डितः ॥
श्रीमद्भागवताचार्य्यो गोविन्दाचार्य्य एव च ।
श्रीसार्व्वभौमः श्रीयुक्तो नन्दनाचार्य्य एव च ॥
श्रीमत्-प्रतापरुद्रश्च रघुनाथो धरामरः ।
हरिदास-द्विजः श्रील-सारङ्गो मकरध्वजः ॥
श्रीबृन्दावन-दासः श्रीजगदीशाख्य-पण्डितः ।
प्रद्युम्न-मिश्रस्तपनाचार्य्यः श्रीभगवांस्तथा ॥
श्रोड्जः श्रीविप्रदासोऽम्बष्ठ-श्रीविष्णुदासकः ।
बनमाली-दास-वैद्यो हरिदासो गदाधरः ॥

श्रोढ्रजः श्रीकृष्णदासः श्रीकाशीश्वर-पण्डितः ।
बलराम-जगन्नाथ-दासौ श्रीचन्दनेश्वरः ॥
सिंहेश्वरः शिवानन्दो बलराम-महत्तमः ।
सुबुद्धि-मिश्रस्तुलसी-मिश्रः श्रीनाथ-संज्ञकः ॥
काशीनाथो हरिभट्टः पट्टनायक-माधवः ।
रामानन्द-वसुर्ब्रह्मचारी श्रीपुरुषोत्तमः ॥
श्रीरामचन्द्र-भूदेवः श्रीमच्छङ्कर-पण्डितः ।
यदुनाथ-कविचन्द्रः पण्डितः श्रीधनञ्जयः ॥
आचार्य्य-श्रीजगन्नाथः श्रीसूर्य्यदास-पण्डितः ।
श्रील-श्रीलक्ष्मणाचार्य्यः श्रीकृष्णाचार्य्य एव च ॥
चैतन्यदासः परमानन्द-गुप्त-भिषग्वरः ।
श्रीजगन्नाथ-कंसारि-सेनौ श्रीयुक्त-भास्करः ॥
कविचन्द्र-श्रीमुकुन्दः श्रीरामः सेन-वल्लभः ।
श्रीयुक्त-बलरामाख्य-दासो महेश-पण्डितः ॥
परमानन्दावधूतः श्रीगङ्गादास-पण्डितः ।
कविराज-श्रीमुकुन्दानन्दः श्रीजीव-पण्डितः ॥
चिरञ्जीवः कृष्णदासः कृष्णदासाख्य-बालकः ।
यदुनाथ-दास-वर्य्यः श्रीकृष्णदास-पण्डितः ॥
राम-तीर्थः कृष्ण-तीर्थः पुरी श्रीपुरुषोत्तमः ।
श्रीमज्जगन्नाथ-तीर्थो रघुनाथ-पुरी तथा ॥
श्रीवासुदेव-तीर्थश्च श्रीलोपेन्द्राभिधाश्रमः ।
अनन्ताभिधान-पुरी हरिहरानन्द-भारती ॥
श्रीमन्नृसिंहचैतन्यः श्रीमदाचार्य्य-माधवः ।
शङ्करो माधवानन्दाचार्य्यो दास-सनातनः ।
शिवानन्द-चक्रवर्त्ति-द्विजनारायणादयः ॥
य एतान् स्मरति प्रातः शृणुते वापि भक्तितः ।
कस्मिन् कालेऽपि स पुमान् यातनां नार्हेति ध्रुवम् ॥

एतान् संस्मृत्य संस्मृत्य यो नमस्कुरुते जनः ।
श्रीवैष्णव-पदे तस्य नापराधः कदाचन ॥
लभते वैष्णव-पदमेतेषां स्मृतिमात्रतः ।
भक्तिञ्च प्रेम-पीयूष-मधुरां देवदुर्लभाम् ॥
सर्व्वेषामप्युपादेयः सर्व्ववेदाधिकस्तथा ।
श्रवणान्नयनाच्चित्तादपि दूरो हि वैष्णवः ॥

इति श्रील-देवकीनन्दन-कविराज-विरचितं
श्रीश्रीवैष्णवाभिधानं सम्पूर्णम् ।

❀ श्रीश्रीसंक्षिप्त-वैष्णववन्दना ❀

भज भज मन श्रीगुरु-चरण
सकल वेदेर सार ।
पतित दुर्गते प्रेमधन दिते
परम करुणा याँर ॥
वन्दों श्रीचैतन्य नित्यानन्द धन्य
सीतानाथ सेइ ठामे ।
युगल चरण करिव वन्दन
गदाधर तार वामे ॥
नवद्वीपपुरी वृन्दावन करि
सुरधुनीतीरे वास ।
सेइ त नगरे आनन्दे विहरे
चैतन्येर यत दास ॥

सवार चरण करिव वन्दन
नीलाचलवासी यत ।
संक्षेपे चरण करिव वन्दन
विस्तारि वन्दिव कत ॥
श्रीरूप सनातन करिया वन्दन
जीव भट्ट रघुनाथ ।
भट्ट-गोपाल-चरण करिव वन्दन
दास-रघुनाथ-साथ ॥
मिश्र पुरन्दर नवद्वीपे घर
वन्दि ताँहार चरण ।
स्वरूप दामोदर चरण वन्दिव
करिया अति यतन ॥
श्रीवास महाशय रामानन्द राय
वन्दना करिव आगे ।
याँहार नाटके यत दुःख थाके
सिंहरवे करी भागे ॥
श्रीशची ठाकुराणी चरण दुखानि
वन्दना करिब आमि ।
श्रीवास-घरणी अच्युत-जननी
दुहुँ-पदे परणामि ॥
गौराङ्ग-चरण भजे येइ जन
ताँहार चरण सेवि ।
वैष्णव-चरण करिव वन्दन
श्रीगुरु-चरण भावि ॥
अनाथेर वन्धु करुणार सिन्धु
सर्व्वजीवे करेन दया ।

दीन हीन जने आपनार गुणे
प्रभु देह पद छाया ॥
ठाकुर गौरीदास अम्बिका निबास
वन्दना करिव ताँरे ।
वन्दों अभिराम अति बलवान्
वंशीकाष्ट करे धरे ॥
बन्दों सरस्वती अति शुद्धमति
चरण वन्दिव ताँर ।
जाति कुल छाड़ि धिक् धिक् करि
गौराङ्ग करिल सार ॥
बन्दों नरहरि लइया गागरी
नगरे नगरे फेरे ।
दुःखी तापी जने आपनार गुणे
वितरल सकरुणे ॥
श्रीरघुनन्दन करिया कीर्त्तन
वन्दिव ताँहार पाय ।
याँहार कीर्त्तने बाहुर दोलने
भूलिला गौराङ्गराय ॥
बसु रामानन्द सेन शिबानन्द
करि चरण बन्दन ।
कवि कर्णपूर भकतेर सूर
वन्दिव ताँहार नन्दन ॥
वन्दिव श्रीधर माधव शङ्कर
प्रभुर सहित खेला ।
वन्दों हरिदास महिमा प्रकाश
नामे वाँधिल भेला ॥

द्विज हरिदास काञ्चन-नगरे वास
गौरप्रेमेते आनन्द ।
दुइ पुत्र याँर गुणेर सागर
श्रीदास गोकुलानन्द ॥
बन्दों वासुघोष सदाइ सन्तोष
गोविन्द याँहार भाइ ।
याँहार अङ्गने बिनोद—बन्धने
नाचे गौर निताइ ॥
चौषट्टि महान्त चरित्र अनन्त
सकलइ ब्रजेर गोपी ।
गिरि—पुरीगण करिब बन्दन
आदि केशव भारती ॥
बन्दों दुइ भाइ जगाइ मधाइ
हरि हरि बलि नाचे ।
याँरे दिया नाम गौर गुणधाम
राखिला आपन काछे ॥
गया—गङ्गा—काशी- अयोध्यादि-वासि-
गणेर बन्दना करि ।
सबार चरण करिब बन्दन
ये थाके मथुरापुरी ॥
नगर—भितरे येबा बास करे
यत वा यमुना—तीरे ।
ता सबा—चरन करिब बन्दन
धरि आमि शिरोपरे ॥
ब्रजवासी—घरे येबा बास करे
जलेर गागरी वय ;
ता सबा—चरण करिते बन्दन
मनेर उल्लास हय ॥
वृन्दावनपुरी आनन्द लहरी
बास करे यत जन ।
ता सबा—चरण करिब बन्दन
सानन्दित हये मन ॥
यत कुञ्जवासी ब्रजेते निवासी
सबार बन्दना करि ।
संक्षेपे चरण करिब बन्दन
विस्तारि वन्दिते नारि ॥
मधुवने हय तालवने रय
कुमुदवने यार घर ।
बहुला—निवासी यत ब्रजवासी
सबे मोरे दया कर ॥
श्रीकुण्डनिबासी श्यामकुण्डबासी
गोवर्द्धनबासी यत ।
एकत्र करिया करिब बन्दन
विस्तारि वर्णिब कत ॥
दिघी काम्यवने थाके यत जने
सबार चरण धरि ।
वृषभानुपुरे आर नन्दीश्वरे
सकलेर बन्दना करि ॥
यावट—निकटे किशोरीर वटे
बास करे यत जन ।
कोकिलवन-वासी वैठल—निवासी
करि चरण बन्दन ॥

पद्‌चिह्न—स्थाने रासलीला स्थाने
दहि ग्रामे यत जन।
कोटिवन—वासी शेषशार्या—निवासी
करि चरण वन्दन ॥
व्रज वृन्दावने मण्डली—वन्धने
तिन शत चौषट्टि ग्राम।
मुञि मूढ़मति कि आछे शकति
प्रतक्ये लइते नाम ॥
रामघाट—तटे आर अक्षय—वटे
नन्दघाटे यत जन।
भद्रवन—वासी भाण्डीर—निवासी
करि चरण वन्दन ॥
वेलवने घर मान सरोवर
लौहवने यार घर।
वलदेव—वासी यत व्रजवासी
सवे मोरे दया कर ॥
राओले गोकुले यमुनार कुले
वने उपवने यत।
संक्षेपे चरण करिव वन्दन
एइ मोर अभिमत ॥
नन्दीश्वरे गिया रामकृष्ण देखिया
आनन्दे हइल भोर।
खेलनवने गिया यमुना देखिया
मन फिरि गेल मोर ॥
हेचढ़ी खेचरी पेटका पिछुड़ी
मिलि ग्रामे यत जन।

दहेगा—पहेगा— भहेगा—निवासी
करि चरण वन्दन ॥
वैष्णव—वन्दन ये करे पठन
येवा करये कीर्त्तन।
अविलम्बे तारे अवश्य मिलये
श्रीकृष्णप्रेम—रतन ॥
देवकीनन्दन करिय वन्दन
आमा हते नाहि हय।
दन्ते तृण धरि निवेदन करि
द्विज हरिदासे कय ॥
वैष्णव—वन्दन प्राते येइ जन
येवा पड़य शुनय।
वृन्दावन याय कुञ्जसेवा पाय
नाहिक शमन भय ॥

इति श्रीश्रीसंक्षिप्त-वैष्णववन्दना समाप्ता।

॥ श्री राधारमणो जयति ॥

अथभक्तसुमिरनीलिख्यते

॥चौपाई॥

सुमिरौं श्री मन-हरण अनूप । महाप्रभु चैतन्य सरूप ॥१॥
श्री नारायण-दास बखानी । भक्तमाल अति ही रस सानी ॥
आज्ञा दी श्री राधा-रमण । भक्त जु नाम मात्र रस श्रवण ॥
भक्त-माल रतनन की माल । कंठ करन हित रची रसाल ॥
कंठ किये माला मन हरणी । सुधि आवन यों भक्त सुमिरिनी ॥
प्रथम भक्त भक्ति गुरु ईस । सुमिरि चरण मधि राखौ सीस ॥
मीन वराह कमठ अरु वामन । परसुराम रघुनाथ जु पावन ॥
श्री-नरसिंह सुमिरि सुखदाई । भक्त प्रह्लाद अति रति माई ॥
बुध कलकी श्रीकृष्ण अरु व्यास । पृथु हरि हंस मन्वंतर वास ॥
यज्ञ ऋषभ हयग्रीव धन्वन्तर । बद्रीपति दत्त कपिल जु ध्रुववर ॥
सनकादिक चौबीसौतार । भक्त इष्ट गाये सुख सार ॥
चिन्ह शंख चक्रादिक जान । प्रभु पद पंकज कर नित ध्यान ॥
विधि नारद शंकर सनकादि । कपिल स्वयंभू जनक प्रह्लादि ॥
बलि भीषम शुक धर्म मरूप । अजामिल प्रभु कृपा अनूप ॥
विष्वक्सेन जै विजै प्रबल बल । नन्द सुनन्द सुभद्र भद्र भल ॥
चण्ड प्रचण्ड विनीत पुनीत । कुमुद कुमुदाक्ष रु सील सुरीत ॥
श्रीसुशील सुसैन पारिषद । सब भक्तन में भक्ति महा हद ॥
कमला गरुड़ हनूमान जामवन्त । सुग्रीव विभीषण सबरी खगपति ॥
ध्रुव उद्धव अक्रूर विदुरवर । अम्बरीप सुदाम ग्राह गज-सुन्दर ॥
पाण्डव चन्द्रहास चित्रकेत । मैत्रे कुन्ती वधू समेत ॥
जोगेश्वर श्रुतदेव सुचकन्द । अंग प्रियव्रत पृथु जग चन्द ॥२१॥

सेस सूत सौनक परचेता । सतरूपात्रै सुता सुचेता ॥२२॥
सुमर परीच्छित सुमति मदालस । यज्ञपतिनी ब्रजनारि निरालस ॥
प्राचीन-बर्हि सतव्रत भागीरथ । सगर रघुतन हरिचन्द हरिपथ ॥
बालमीक मिथिलेस सुजानि । भरथ दधीचि रुक्मांगद जान ॥
सुरथ सुधन्वा सिबिरु विध्यावलि । मोल मोरध्वज ताम्र रसाल ॥
अलरक रिभु इक्ष्वाकु रु ऐल । सुचि सतधन्वा गाध रघु सैल ॥
रंतिदेव अमूरति नहुष उतरंग । भूरि देवल वैवस्वत मनु अंग ॥
जजाति दिलीप पूरु यदुराय । मानधाता अरु निमि समुदाय ॥
विप्पल भरद्वाज सरभंग । संजय दक्ष समीक सुरंग ॥
उत्तानपाद अरु जाग्यवल्क-ऋषि । सुमिरि निरंतर यहै परमसिधि ॥
कवि हरि करभाजन रु सुचि अंतरिक्ष अरु चमस प्रबुधि ॥
आविर होत्र अरु द्रमिल प्रसिद्ध । पिप्पल आदि ए सब हि सिद्ध ॥
अगस्त्यपुलस्त्यपुलहसौरभऋषि । चिमनवशिष्ठऋद्धसुव्यासर्सिपि ॥
अत्रि ऋचीक गर्ग गौतम सुचि । लोमस भृगु दालभ्य परम रुचि ॥
विश्वामित्र माण्डव दुर्वासा । बहुसिख शृंगी श्रीअंगीरामा ॥
जामदग्नि जाबल्य मयादस । पारासर कश्यप परवत रस ॥
स्मृति अठारह और पुरान । इनके करता रस की खान ॥
जयन्त सिष्ट विजयी अनिचार । सुराष्ट्र राष्ट्र वर्द्धन रस सार ॥
अशोक धर्म-पालक ततुवेता । मंत्री वर्य सुमन्त सुचेता ॥
अंगद सुग्रीव दधिमुख जानो । द्विविद मयंद उल्का पहिचानो ॥
सुसेन दधीमुख कुमुद नील नल । सरभ गवै गवाक्ष सु अतिबल ॥
पनस गन्ध मादन बांदरबार । पदम अठारह यूथप सुन्दर ॥
गोप प्रजन्य सुतनय नन्द जानो । धरानन्द ध्रुव-नन्द बखानो ॥
श्रीउपनन्द अभिनन्द सुनागर । नन्द सुनन्द अधिक सुखसागर ॥
करमा धरमा नन्द अभिनन्दन । करत निरंतर सब जग वन्दन ॥
महरि जसोदा कीरती-रानी । श्रीवृषभानु-कुंवरि रससानी ॥४७॥

श्री ललितादि सहचरी वृंद । सखा सुबाहु सुबल सुखकन्द ॥४८॥
मधु-मंगल भोज अर्जुन श्रीदामा । मित्र अनेक गनै को नामा ॥
रक्तक पत्रक पत्री दास । मधु-कंठ मधुवर्त प्रकाश ॥
रसाल विसाल प्रेमकन्द प्राण । चन्द्रहास मकरंद रस दान ॥
पयद बकुल सब सेवा भीजे । नन्द-कुंवर जिन पर अति रीझे ॥
सप्त दीप में जे हरिदास । ते मो पर करौ कृपा प्रकाश ॥५३॥
मध्य दीप नव खण्ड बखान । सेवक सेव्य मन हीं रसखान ॥
श्वेत दीप अनुरागी भक्त । पलक परै सु भूल गयो जक्त ॥
पद्म संकु इला पत्र जु सर्प । बासुकि अजित असु कमल सु-अर्प ॥
तक्षक कर ओटक हरि प्यारे । श्री-अनन्त प्रभु नाम उचारे ॥
आरस भक्त इते सब भये । अब सुमिरौं जे काल में नये ॥
रामानुज अरु मध्वाचारज । विष्णुस्वामि निम्बादित आरज ॥
विष्वक्सेन पटकोप मंगल मुनि । बोपदेव श्रीनाथ जगत धनि ॥
पुण्डरीकाक्ष परांकुशध्याय । राममिश्र जामुन मुनि गाय ॥
श्रुति-प्रज्ञ श्रुतिदेव बिदांबर । श्रुतिधामा श्रुति-उदधि जु सुन्दर ॥
लाला-चारज श्री-गुरुनिष्ठ । देवाचारज महा वरिष्ठ ॥
हरियानन्द राघवानन्द । जिनके प्रगटे रामानन्द ॥
भावानन्द नरहरि पद्मावत । अनन्तानन्द हरि गुन गावत ॥
जोगानन्द गयेस करमचन्द । रामदास श्रीरंग सदानन्द ॥
कृष्णदास पैहारी नरहरि । भज दिन रैन और सब परि हरि ॥
महा हठी नरायन सूरज । पुरषा पृथु तपूर भक्ती सज ॥
टीला पद्म नाम गोपाल । देवा हेम कल्यान रसाल ॥
गदाधारी गंगा नारीवर । विष्णुदास कान्हर चांदन कर ॥
बाइस वीरी रंगा नाम । कोल्ह सुमेरु देव अभिराम ॥
अगरदास श्री-संकराचारज । नामदेव जयदेव जु आरज ॥
श्रीधर बिल-मंगल मंगलतन । ज्ञानदेव श्री-विष्णुपुरी धन ॥७३॥

श्री-तिलोचन वल्लभा-चारज । भक्तदास भक्त सुख कारज ॥७४॥
नरसिंह रूप है तन मन भये । पुनि दसरथ है तन तजि गये ॥
बांधे सुने कृष्ण जय दाम । प्राण तजे ताही छिन भाम ॥
महा प्रसाद अवज्ञा जान । राजा निपुन कटायो पाणि ॥
करमा सिल-पिल्ले की भक्त । हरि रस मगन भूलि गई जक्त ॥
भक्तन हित सुत गरल पिवायो । सो जस पात पात में छायो ॥
रंगनाथ को सदन बनायो । जैन भ्रम रचि तन बिसरायो ॥
हंस बंधे बाने की लाज । हरि रक्षा करि मारे काज ॥
सुत अपनो जब हरि जन मार्यो । कन्या दई अपनपो वार्यो ॥
कामधुज देवा भुवन चौहान । जैमल ग्वाल श्रीधर पहिचान ॥
निसकिचन हरिपाल सुहायो । विप्र भक्त हित साखि बुलायो ॥
रामदास के सदन सिधारे । जसु स्वामी के वृषभ संभारे ॥
घार-मुखी रु अल्ह नन्ददास । बीच राम दै करि विस्वास ॥
माला तिलक निष्ठ इक दास । अन्तर निष्ठ महा सुख रास ॥
गुरु-निष्ठा में परम प्रवीन । श्रीरैदास भक्त रस लीन ॥
श्रीकबीर औ पीपा भृत्य । धना सैन सांचे हरि कृत्य ॥
सुखानन्द रु सुरसुरानन्द । नारी सुरसरि अति सुख कंद ॥
श्री-नरहरियानन्द सुधीर । पद्म-नाभ दै मेटी भीर ॥
तत्वा जीवा दक्षिन देश । माधौ-दास हरि भक्ति अशेस ॥
श्रीरघुनाथ-गुसाइं नाम । सुमिरौ जो चाहत हौ स्याम ॥
भजि लै श्री नित्यानन्द राम । उर आवत वृन्दावन धाम ॥
महा-प्रभू श्री कृष्ण-चैतन्य । कलि अवतार कियो जग धन्य ॥
सूरदास सागर गुन आगर । परमानन्द अति रसिक उजागर ॥
केसौभट्ट श्रीभट्ट सु साधु । श्रीहरिव्यास सब रस अगाधु ॥
सुमिरि दिवाकर बीठल-नाथ । श्रीगिरिधर गोविन्द जु साथ ॥
बाल-कृष्ण श्रीगोकुलनाथ । श्री रघुनाथ औ जदुनाथ ॥१००॥

श्रीघनश्याम पगे कृष्णदास । वर्द्धमान गंगल रस-रास ॥१००॥
भीषम रामराय परताप । क्षेम-गुसाईं मेट्यो ताप ॥
बिठलदास माथुर अभिराम । हरी-राम कमलाकर नाम ॥
श्रीनारायण-भट्ट प्रवीन । बल्लभ रास रस अति ही लीन ॥
रूप सनातन रस आचारज । ह्वै करि प्रगट किये रस कारज ॥
श्रीहरिवंस गुसाईं भजौ । कुञ्ज केलि रसही में सजौ ॥
श्री स्वामी हरि-दास रसीले । जिनके उर में जुगल छबीले ॥
श्रीमत व्यास रस-रास-रसिक वर । हरि के दास किये सर्वोपरि ॥
श्री मत जीव-गुसाईं धीर । रस-सागर उर अति गंभीर ॥
श्री-गोपाल-भट्ट गोस्वामि । राधा-रमण प्रगट अभिराम ॥
हृषीकेश भगवान सुनागर । बीठल बिपुल महा रस सागर ॥
लोकनाथ जगन्नाथ महाशय । मधु गुसाईं अति स्वच्छ आसय ॥
कृष्णदास गोविंद अधिकारी । दूजे मदन-मोहन उर प्यारी ॥
श्रीरँग घमंडी जुगल-किशोर । श्रीभूगर्भ रु सुरस हिलोर ॥
श्यामानन्द श्री-रसिकानन्द । जिन सुमरे उपजत आनन्द ॥
श्रीहरिनाभि तिलोचन धीर । सोभा सींवा अधार गम्भीर ॥
आसाधर श्रीराज विचित्र । सधना नीर पदारथ चित्र ॥
श्रीकाशीश्वर परम-रसाल । लाड लडाये गोविंदलाल ॥
कृष्णदास कट हरिया डूंगर । सोभू ऊदा राम नाम वर ॥
बिमलानन्द पदम सुखरास । रामदास जग मेट्यो त्रास ॥
सबल जती राम सन्त सीही । खोजी स्याम मनोरथ जीही ॥
दूल्हा पदम रांका धोगू जप । चाचा गुरू सवाई हरि तप ॥
जाडा चांदा नापा माली । कीता चतुर प्रभु रति प्रति पाली ॥
लछिमन लफरा लडू जु सन्त । सूरिज कुम्भनदास महंत ॥
खेम बिमानी बिरही भरत । भावन नफर हरिदास सुचरित ॥
चक्रपानि हरिकेस लुटेरा । तिलोक पुखरदी हरि कियो नेरा ॥२५॥

उद्धव चिजुरी बन चर बंस । सोम भीम महरा पर मंस ॥२६॥
सोमनाथ भजि बिको बिसाखा । लखध्याना मुकुन्द अभिलाखा ॥
बालमीक रघु वृद्ध व्यास । गनेस त्रिविक्रम अति सुख रास ॥
खांभू जगन त्रिठल आचारज । हरिभू राघौ अति ही आरज ॥
लाला लाखा श्री हरिदास । छीतर उद्धव कियो प्रकाश ॥
घाटम चूरी और कपूर । देवानन्द खेम रस पूर ॥
श्रीमुकुन्द नर-हरियानंद । संतराम अति ही आनंद ॥
विष्णु मही पति बीदा गांडन । बाजू सुत छीत माधौ जन ॥
श्रीरंग द्वारकादास दामोदर । रूपा नरहरि कान्हर सुन्दर ॥
केसव श्रीभगवान प्रयाग । नागु सुत गोपाल सराग ॥
केशव पुनि हरिनाथ भीम भजि । ब्रह्मचारी गोविन्द भक्ति सजि ॥
खेता पंडा सु गोपीनाथ । श्रीमुकुन्द गजपति गुण गाथ ॥
बालकृष्ण बड भरथ गुपाल । उर राजत हरि रसिक रसाल ॥
अच्युत विद्यापति ब्रह्मदास । सुमति बहोरण गोबिंद आस ॥
चतुर बिहारी गंगाराम । लाल बरसानियां अभिराम ॥
केशौ नंद सुवन की छाप । परसराम मेटत सब ताप ॥
प्रियदयाल पूरन नृप भीषम । जनदयाल श्रीव्यास करन सम ॥
श्रीरघुनाथ अरु गोपीनाथ । रामभद्र बीठल रघुनाथ ॥
गुंजा-माली दासू स्वामी । श्री चिरा मर हठ निह-कामी ॥
उत्तम जदुनंदन गोविन्द । मुरली सोती रामानंद ॥
हरिदास मिश्र भगवान मुकुंद । केशौ दंडौती आनंद ॥
बिष्णुदास वेनीजु चतुर-भुज । सीवा झाली सुमिर मिटै रुज ॥
प्रभुता कुंवरि उमा भठियानी । सोभा श्री-गणेश देरानी ॥
गंगा गौरी गोपाली कृत । कला लखा मति भामा अति मति ॥
मानमती सुचि गढो सुदेस । जमुन कोली भक्ति प्रवेश ॥
रमा मृगा देवा जुग जेवा । केकी कमला भक्तनि सेवा ॥५१॥

हीरा हरि गोरी सु देवकी । ए जुबती नहि काहू सकी ॥५२॥
नर वाहन जापू वीदावत । धारा अनुभई ऊदारावत ॥
जयंत रूप अर्जुन गोविन्द । श्री-जनार्दन हेम सुछंद ॥
गदा दमोदर ईश्वर गावै । श्री सापिले मथानंद भावै ॥
तुलसीदास जटिया ते भाऊ । दास सु मोहन बारी दाऊ ॥
बनियां राम लछमन भगवान । श्रीजगदीशदास गति मान ॥
उभै गुपाल लाल पतधारी । श्री नरसी कीरति विस्तारी ॥
श्रीद्वियदास जमोध बर बंस । नंददास सो जग पर-संस ॥
जन-गोपाल माधौ विसवास । अंगद को हीरा परकास ॥
नृपति चतुर-भुज मीराबाई । जिनकी कीरति रसिकनि गाई ॥
पृथीराज राजा बड़ भाग । रामचंद्र नीवां रस भाग ॥
उभै-राम वीरम सुरतान । ईश्वर अखैराज भगवान ॥
राय-मल्ल मधुकर करमसी । कान्हर नृप जस राजत ससी ॥
श्री-खैमाल रतन राठौर । जाको कुल सब जग सिर मौर ॥
राम नृपति राजा तिन धरनी । बड़ी उदार संत मन हरनी ॥
श्रीकिशोर संतनि के संमत । हरिदास हरि सों गति मति रति ॥
श्रीचतुरभुज रसिक सुजान । कृष्णदास जाड़ा गुण गान ॥
श्रीप्रबोध रसराम रसिक बस । उपाये जिय दै प्रेम सुधा रस ॥
श्रीप्रबोध विमलानंद संत । भक्त भागवत गुन नहि अंत ॥
सूरदास रस कथा अनंत । मदनमोहन जिहि छाप लसंत ॥
श्रीकात्यायनि तिय रंग संगी । श्रीकमुरारि कीरति जग-भगी ॥
श्रीमत तुलसीदास अनन्य । मानदास जग में अति धन्य ॥
सुमिरों श्री बनवारी स्याम । श्रीनारायन-मिश्र अभिराम ॥
रांघौ श्री हरिदास बावनो । परसराम गुन निसि दिन गनो ॥
भट्ट-गदाधर परम रसज्ञ । चौमुख चौर सब सरवज्ञ ॥
चंद लगन ईश्वर अरु कोल्ह । साधु अलूको दाख्यो बोल ॥७७॥

माधौ करमानन्द सु मांडन । जीवानंद रहे तन मन हरि सन ॥७८॥
नारायन दास सु चारन । पृथीराज नृप कुल निम तारन ॥
कायां पति सीवा सुखदाई । रतनावती सु कीरति गाई ॥
जगन्नाथ श्री-मथुरादास । नृतक-नारायण दास प्रकास ॥
राधाकृष्ण नाम जा के मुख । नाथ भक्ति ताके उर बहु सुख ॥
बोहिथ राम गोपाल कुँवर वर । गोविंदमाडिल छीनस्वामि पर ॥
श्रीजसवंत गदाधर कान्हर । श्रीअनंतानंद नारद उर धर ॥
दीनदास जु स्याम हरि नाम । बछ पातल गोसु हरि लाम ॥
रामदास भगवान बिहारी । कृष्ण जीवन जीवन उर धारी ॥
स्यामदास श्री हरि नारायण । उद्धवराम रैन जस गायण ॥
परसराम गंगा किंकर हरि । कृष्ण दास कूंढा जू उरधरि ॥
कृष्णदास गोपानंद खेम । सोढ़ा जै देव राघौ नेम ॥
विदुर दयाल दमोदर मोहन । श्री परमानंद उद्धव सोहन ॥
चतुरदास नागा रग मगे । गोसां परमानंद जग मगे ॥
प्रधान द्वारका मथुरा खोरा । बीठल श्री भगवान को जोरा ॥
चीधर स्याम जु खेम गोपाल । संतन सौं करी रति प्रतिपाल ॥
केवल कूबा सेवा साध । श्री प्रयाग जंगी आराध ॥
पूरण बनवारी भगवान । जगत विनोदी नरसिंह जान ॥
श्री किशोर जगन्नाथ दिवाकर । खीची खेम भक्ति की आकर ॥
सुमति सलूधौ उद्धव संग । श्री परमानंद हरि रस रंग ॥
स्योला खेम भजन सुख सागर । केशौ जोगी दास उजागर ॥
हरीदास कान्हर रति रासी । भगवान नीवा खेता सो ॥
श्री जसवंत भीम जैमाल । विष्णुदास हरिदास गोपाल ॥
नाथ भट्ट बृज रस पारायण । करमैती हित रसिक रसायण ॥
खरगसैन श्री गंग सुग्वाल । बृज रस गायो करे निहाल ॥
श्री मत लालदास सुदिवाकर । माधौ ग्वाल महा रस आकर ॥३॥

राघौ रसिक प्रेम निधि धन्य । हरि नारायण नृपति अनन्य ॥५॥
उद्धव पद्म सुदिव्य कल्यान । बोहिथ रामदास सुख खान ॥
श्री परमानंद तुलसीदास । दयाराम बाई रति राम ॥
हीरा हीरामणि नीरा तिय । लाली लड़ा गोमती अति प्रिय ॥
जुग पार्वती श्री केसी सेव । जेवा हरषां भजि हरिदेव ॥
बादर रानी भक्त उपासन । श्री गंगा जमुना रैदासिनि ॥
कुंवरि राय कीरति विस्तार । कान्हर दास लह्यो रस भार ॥
परमा केशव नाम लुटेरा । केवल राम जग भरम निवेरी ॥
श्री हरिवंस विरक्त प्रवीन । श्री कल्यान रस में नित लीन ॥
छाहक बीठलदास सदानंद । श्री रंग स्यामदास आनंद कंद ॥
लाखो मारू मुदित कल्यान । वंशी परस नरायण गान ॥
संकर चेता ग्वाल गोपाल । लीला गाई रसिक रसाल ॥
कृष्णदास हरिदास धुरंधर । चिदा सुख तीरथ राम दामोदर ॥
नरसिंहारण्य सु कीनी भक्ति । श्री मधुसूदन माधौ हरि रति ॥
श्री प्रबोधानंद रंगीन । गाइ कुंजकेलि रसिक प्रवीन ॥
और संत प्रिया रंग भीन । श्री जगदानंद अति रस लीन ॥
रामभद्र हरि भजन विलास । पूरण और द्वारिकादास ॥
लछिमन भट्ट हरि परम धर्म पर । कृष्णदास करनी सर्वोपर ॥
अति रस विप्रन गदाधरदास । श्री नारायण दास सुवास ॥
श्री भगवानदास मरसाई । श्री कल्यान अतिसै सुखदाई ॥
संतदास श्री माधौदास । श्री कान्हर जग भक्ति प्रकाश ॥
लेखक गोविन्ददास रसाल । जा उर राजी भक्ति सुमाल ॥
जगतसिंह नारायण इष्ट । गिरधर ग्वाल कवीश सुदृष्ट ॥
गोपाली हरि भक्त लड़ाये । रामदास नीके गुन गाये ॥
रामराय कामादिक टारे । श्री भगवन्त मुदित अति प्यारे ॥
लालमती बाई सुखदाई । वृन्दावन वसि रति निधि पाई ॥६०॥

ये सब भक्त नाम सुठि गाये । रसमय ताते मो मन भाये ॥
श्रीमत राधा रमण पुजारी । आज्ञा दी सो मैं उरधारी ॥
भक्त नाम सुमिरनी कीनी । पढ़त सुनत अति ही रस भीनी ॥
प्रात पढ़े भक्तन के नाम । तौं उर झलकैं स्यामा स्याम ॥
भक्त सुमिरनि सुमरन करै । प्रियादास तिन पद रज धरैं ॥
॥ इति श्रीरसिकराज श्रीप्रियादासजू कृत भक्तसुमिरनी सम्पूर्ण ॥

श्रीश्री वैष्णवशरण ।

वृन्दावनवासी यत वैष्णबेर गण ।
प्रथमे बन्दना करि सबार चरण ॥
नीलाचलवासी यत महाप्रभुर गण ।
भूमिते पड़िया बन्दों सबार चरण ॥
नवद्वीपबासी यत महाप्रभुर भक्त ।
सबार चरण बन्दों हञा अनुरक्त ॥
महाप्रभुर भक्त यत गौड़देशे स्थिति ।
सबार चरण बन्दों करिया प्रणति ॥
ये देशे ये देशे वैसे गौराङ्गेर गण ।
उर्द्ध बाहु करि बन्दों सबार चरण ॥
हञाछेन हवेन प्रभुर यत दास ।
सबार चरण बन्दों दन्ते करि घास ॥
ब्रह्माण्ड तारिते शक्ति धरे जने जने ।
ए वेद पुराणे गुण गाय येबा शुने ।
महाप्रभुर गण सब पतित—पावन ।
ताइ लोभे मुञि पापी लइनु शरण ॥
बन्दना करिते मुञि कत शक्ति धरि ।
तमोबुद्धि-दोषे मुञि दम्भ मात्र करि ॥

तथापि मूकेर भाग्य मनेर उल्लास ।
दोष क्षमि मो अधमे कर निज—दास ॥
सर्व्ववाञ्छा—सिद्धि हय यमबन्ध छूटे ।
जगते दुर्लभ हया प्रेमधन लुटे ॥
मनेर वासना पूर्ण अचिराते हय ।
देवकीनन्दन दास एइ लोभे कय ॥ १ ॥

इति श्रील देवकीनन्दन-दास-विरचित श्रीश्रीवैष्णवशरण समाप्त ।

श्रीश्रीगौरगणोद्देश ।

गौरगण । — स्वरूपनिर्णय ।

उपेन्द्रमिश्र (महाप्रभु के पितामह) ...पर्जन्य (श्रीकृष्ण के पितामह)
नीलाम्बरचक्रवर्त्ती (मातामह) ...गर्गमुनि औरसुमुख (मातामह)
जगन्नाथमिश्र (पिता) ...नन्द (श्रीकृष्ण के पिता)।
शचीदेवी (माता) ...यशोदा (माता)।
ईश्वरपुरी (दीक्षागुरु) ...सान्दीपनिमुनि ।
केशवभारती (सन्न्यास गुरु) ...अक्रूर ।
गङ्गादासपण्डित (विद्यागुरु) ...वशिष्ठ ।
मुकुन्द वा हाड़ाइ पण्डित (नित्यानन्द के पिता) वसुदेव (रामकृष्ण केपिता)
पद्मावती (माता) ...रोहिणी (बलराम की माता)
वल्लभाचार्य्य (लक्ष्मीदेवी केपिता)...भीष्मक (रुक्मिणीकेपिता)
सनातनमिश्र(विष्णुप्रियाकेपिता) सत्राजितराजा(सत्यभामाकेपिता)
वनमाली (लक्ष्मी का विवाह घटक) ...विश्वामित्र ऋषि ।
काशीनाथ(विष्णुप्रिया वि.घटक)कुलक(सत्यभामा के विवाह घटक)
पुण्डरीकविद्यानिधि ...वृषभानुराजा ।

गौरगण । — स्वरूपनिर्णय ।

सूर्य्यदास (वसुधा तथा जाह्नवा के पिता) ... ककुद्मि (रेवती के पिता)।
नित्यानन्दप्रभु ... बलराम ।
वसुधा (नित्यानन्द की पत्नी) ... वारुणी (बलराम की पत्नी)।
जाह्नवा (" ") ...अनङ्गमञ्जरी तथा रेवती ।
वीरचन्द्र (नित्यानन्दप्रभु के पुत्र) ...पयोब्धिशायी ।
गङ्गा (" की कन्या) ... गङ्गा (विष्णुपादोद्भवा)।
माधवाचार्य (गङ्गा के स्वामी) ...शान्तनुराजा (गङ्गास्वामी)।
मीनकेतन रामदास ...सङ्कर्षण के आदिव्यूह ।
श्रीअद्वैताचार्य ... सदाशिव ।
सीतादेवी (श्रीअद्वैत की पत्नी) ... योगमाया-भगवती ।
नन्दिनी (सीता की दासी) ...जया (भगवती की दासी)।
जङ्गली (" ") विजया (" ")।
अच्युतानन्द (अद्वैतप्रभु के पुत्र) ...अच्युता गोपी ।
कृष्णमिश्र (" ") ... कार्त्तिकेय ।
श्रीगदाधर पण्डित ... श्रीराधारानी ।
श्रीवास पण्डित ... श्रीनारद ।
मालिनी(श्रीवास की पत्नी)...अम्बिका(श्रीकृष्ण की धात्रीमाता)।
नारायणी (" भ्रातृकन्या) ... किलिम्बिका ।
लक्ष्मीप्रिया(महाप्रभु की पत्नी)...रुक्मिणी(श्रीकृष्ण की पत्नी)।
विष्णुप्रिया (" दूसरी पत्नी)...सत्यभामा " ")।
नरहरि सरकारठाकुर ... मधुमती ।
रघुनन्दन (खण्डवासी) ...प्रद्युम्न ।
वक्रेश्वरपण्डित ...अनिरुद्ध ।

गौरगण ।	स्वरूपनिर्णय ।
गदाधरदास	...पूर्णानन्दा (बलरामप्रिया गोपी)।
गोपीनाथाचार्य्य	... ब्रह्मा ।
मुरारिगुप्त	... हनुमान् ।
पुरन्दर पण्डित	... अङ्गद ।
गोविन्दानन्द	...सुग्रीव ।
रामचन्द्रपुरी	...विभीषण और जटिला ।
हरिदास ठाकुर	...प्रह्लाद और ऋचिक मुनि के पुत्र ब्रह्मा ।
देवानन्द पण्डित (कुलियानिवासी)	... भागुरीमुनि ।
वृन्दावन दास	...वेदव्यास ।
वल्लभभट्ट	... शुकदेव ।
चन्द्रशेखर सरखेल	...चन्द्र ।
विश्वेश्वराचार्य्य	... सूर्य ।
वनमाली भिक्षुक	... सुदामा विप्र ।
शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी	... प्रधाना यज्ञपत्नी ।
जगन्नाथाचार्य	...दुर्वासा ।
जगन्नाथ (जगाइ)	... जय (वैकुण्ठ के द्वारपाल) ।
माधव (माधाइ)	... विजय (" ")।
गरुड़ पण्डित	...गरुड़ (विष्णुवाहन) ।
प्रतापरुद्र	...इन्द्रद्युम्न ।
परमानन्दपुरी	...उद्धव ।
सार्व्वभौम भट्टाचार्य	... बृहस्पति (देवगुरु) ।
भास्कर ठाकुर	... विश्वकर्मा ।
काशीश्वर (महाप्रभुभृत्य)	... भृङ्गार (श्रीकृष्णभृत्य)।
गोविन्द "	... भङ्गुर (" ")

गौरगण	स्वरूपनिर्णय ।
हरिदास (महाप्रभुभृत्य	...रक्तक (कृष्णभृत्य)
वृहच्छिशु "	...पत्रक (" ")
रामाइ "	... पयोद (व्रज में जलसंस्कारकारी) ।
नन्दाइ "	... वारिद (" "
ईशान दास	... शाण्डिल्यमुनि ।
गौरीदास कीर्त्तनीया	... कलकण्ठी (व्रज में गायक) ।
वनमाली पण्डित	...मालाधर (व्रज में वेणु तथा मुरलीधारक) ।
लोकनाथ	...सनक ।
श्रीनाथ	...सनातन ।
रामनाथ	...सनत्कुमार ।
काशीनाथ	...सनन्दन ।
रायभवानन्द	...पाण्डुमहाराज ।
वाणीनाथ (भवानन्द के पुत्र)	...युधिष्ठिर ।
कलानिधि "	...भीम ।
राय रामानन्द "	...अर्ज्जुन तथा अर्ज्जुनीयागोपी । विशाखा (मतान्तर में) ।
सुधानिधि "	...नकुल ।
गोपीनाथ "	—सहदेव ।
सेन शिवानन्द	—वित्रा (मतान्तर में वीरादूती ।)
मालती (शिवानन्द की पत्नी)	—विन्दुमती ।
चैतन्यदास (शिवानन्द के पुत्र)	—दक्ष (व्रज में शुकपक्षी) ।
रामदास "	—विचक्षण (" ") ।

गौरगण ।	स्वरूपनिर्णय ।
कविकर्णपूर (शिवानन्द के पुत्र)	—मधुरेक्षणा (मतान्तर में गुणचूड़ासखी) —तथा सूक्ष्मधी (व्रज की सारी)।
सत्यानन्द सरस्वती	—गौतम ।
श्रीकान्त सेन	—कात्यायनी ठाकुरानी ।
उद्धवदास	—पद्मा ।
वंशीदास ठाकुर	—श्रीकृष्ण की वंशी ।
जगदानन्द पण्डित	—सत्यभामाप्रकाशविशेष ।
कृष्णदास कविराजगोस्वामी	—कस्तूरीमञ्जरी ।
सारङ्गठाकुर	—नान्दीमुखी ।
सत्यराजखान	—सुकण्ठी ।
मुकुन्द (खण्डवासी)	—वृन्दादेवी ।
भगवानाचार्य	—रत्नावली ।
द्विजहरिदास	—श्याममञ्जरी ।
वाणीनाथपण्डित	—कलभाषिणी ।
नवाइ होड़	—नीलकान्ति सखी ।
कृष्णदास सरखेल	—सम्मोहिनी सखी ।
विहारी कृष्णदास	—विद्युल्लता सखी ।
होड़हरिदास	—रत्नावली सखी ।
श्रीनाथ पण्डित	—चित्राङ्गी सखी ।
गालिम जगन्नाथ	—सुखपाली सखी ।
पुरुषोत्तम ब्रह्मचारी	—आह्लादिनी सखी ।
प्रद्युम्न मिश्र	—मधुमङ्गल ।
गोपालगुरु	—सुमुखी गोपी ।

गौरगण ।	स्वरूपनिर्णय ।
राघव (झालिवाहक)	—मालाधर (व्रज का भृत्य)।
दमयन्ती (राघव की भग्नी)	—गुणमाला (व्रज का दासी)।
राघवपण्डित (पानिहाटी निवासी)	—धनिष्ठा ।
जगदीश (नृत्यविनोदी)	—चन्द्रहास (व्रज का नट)।
शङ्करघोष (डम्फवादक)	—सुधाकर (व्रज में मृदङ्गवादक)।
वैद्यविष्णुदास	—सारदा (व्रज में गायक)।
बुद्धिमन्तखान	—मधुव्रत (व्रज का भृत्य)।
जगदीशपण्डित (यसोड़ा निवासी)	—चन्द्रलतिकासखी ।
काशीश्वरगोस्वामी	—शशिरेखा ।
माधवीदासी	—कलाकेली ।
जगदीश तथा हिरण्यक	—दोनों जन यज्ञ पत्नी ।
भागवताचार्य	—श्वेतमञ्जरी ।

द्वादश गोपाल ।

अभिरामठाकुर	—श्रीदाम ।
सुन्दरानन्दठाकुर	—सुदाम ।
धनञ्जयपण्डित	—वसुदाम ।
गौरीदासपण्डित	—सुबल ।
कमलाकरपिप्पलाइ	—महाबल ।
उद्धारणदत्त	—सुबाहु ।
महेशपण्डित	—महाबाहु ।
पुरुषोत्तमदासठाकुर	—स्तोककृष्ण ।
नागर पुरुषोत्तम	—दाम ।
परमेश्वरदासठाकुर	—अर्जुन ।

गौरगण ।	स्वरूपनिर्णय ।	
कालाकृष्णदास	—लवङ्ग ।	
श्रीधरपण्डित	—कुसुमासव ।	
हलायुधपण्डित	—प्रबल (व्रज में सखा) ।	
रुद्रपण्डित	—वरूथप	,,
कुमुदानन्दपण्डित	—गन्धर्व	,,
काशीश्वरपण्डित	—किङ्किणी	,,
वनमालीमीभा	—अंशुमान्	,,
सन्तठाकुर	—भद्रसेन	,,
मुरारिमाहाति	—वसन्त	,,
गङ्गादास	—उज्ज्वल	,,
गोपालठाकुर	—कोकिल	,,
शिवाइ	—विलासी	,,
नन्दाइ	—पुण्डरीक	,,
विष्णाइठाकुर	—कलविङ्क	,,

अष्टगोस्वामी ।

श्रीरूपगोस्वामी	—रूपमञ्जरी ।
श्रीसनातनगोस्वामी	—लवङ्गमञ्जरी ।
श्रीरघुनाथभट्टगोस्वामी	—रसमञ्जरी ।
श्रीजीवगोस्वामी	—विलासमञ्जरी ।
श्रीगोपालभट्टगोस्वामी	—गुणमञ्जरी ।
श्रीरघुनाथदासगोस्वामी	—रतिमञ्जरी ।
श्रीलोकनाथगोस्वामी	—मञ्जुलालीमञ्जरी ।
श्रीभूगर्भगोस्वामी	—प्रेममञ्जरी ।

अष्टसिद्धिः—अनन्तपुरी, कृष्णानन्दपुरी, सुखानन्दपुरी, गोविन्दपुरी, रघुनाथपुरी, केशवपुरी, दामोदरपुरी, राघवपुरी ॥

क्रमतः—अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व, कामावसायित्व ॥

नवनिधिः—श्रीनिधि, श्रीगर्भ, कविरत्न, सुधानिधि, विद्यानिधि, गुणनिधि, रत्नबाहु, आचार्यरत्न, रत्नाकरपण्डित ॥

क्रमतः—पद्म, महापद्म, शङ्ख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व ॥

नवजयन्तपुत्रः—नृसिंहानन्दतीर्थ, सत्यानन्दतीर्थ, चिदानन्दतीर्थ, जगन्नाथतीर्थ, वासुदेवतीर्थ, श्रीरामतीर्थ, गरुड़अवधूत, गोपेन्द्रआश्रम ॥

क्रमतः—जयन्त के नै पुत्र ॥

अष्ट प्रधान महन्तः—

गौरगण—		व्रजपरिकरः—
स्वरूपदामोदर	—	ललिता ।
रायरामानन्द	—	विशाखा ।
सेनशिवानन्द	—	चित्रा ।
रामानन्दवसु	—	चम्पकलता ।
माधवघोष	—	तुंगविद्या ।
गोविन्दानन्दठाकुर	—	इन्दुरेखा ।
गोविन्दघोष	—	रंगदेवी ।
वासुदेवघोष	—	सुदेवी ।

चौपठ महन्त की भोगमाला:—

पञ्चतत्व:—श्रीमन्महाप्रभु, श्रीनित्यानन्दप्रभु, श्रीअद्वैतप्रभु, श्री-गदाधरपण्डित तथा श्रीवासपण्डित ॥ (पूर्वाभिमुख में)

पञ्चतत्व की वांई ओर दक्षिणाभिमुख में—

गुरुवर्ग की यथा—माधवेन्द्रपुरी, ईश्वरपुरी, परमानन्दपुरी, विष्णु-पुरी, रघुनाथपुरी, कृष्णानन्दपुरी, नृसिंहानन्दपुरी, सुखानन्दपुरी, अनन्तपुरी, रामचन्द्रपुरी ॥

गुरुवर्ग के वामभाग दक्षिण मुख में—

भारतीगोस्वामियों कीयथा—केशवभारती, ब्रह्मानन्दभारती, वलरामभारती, रामानन्दभारती वल्लभभारती, यदुनन्दनभारती, श्यामानन्दभारती ॥

पञ्चतत्व के वाम भाग पूर्वाभिमुख में—

द्वादश गोपालों की यथा—अभिरामठाकुर, सुन्दरानन्दठाकुर, धन-ञ्जयपण्डित, गौरीदासपण्डित, कमलाकरपिप्पलाई, उद्धारणदत्त, महेशपण्डित, पुरुषोत्तमदास, नागरपुरुषोत्तम, परमेश्वरदास, कालाकृष्णदास, खोलावेचा श्रीधरपण्डित ॥

भारतीगोस्वामियों की वांई ओर पूर्वाभिमुख में—

अष्टप्रधान महन्त—स्वरूपदामोदर, रायरामानन्द, सेनशिवानन्द, रामानन्दवसु, माधवघोष, गोविन्दानन्दठाकुर, गोविन्दघोष, वासु-देवघोष ॥

अष्टप्रधान महन्त की वांई ओर पूर्वमुख में प्रत्येक के आठ आठ कर के कुल चौपठ—

स्वरूपदामोदरगोस्वामी के आठ पार्षद:—

चन्द्रशेखर आचार्य, रत्नगर्भठाकुर, गोविन्द, गरुड़, मुकुन्ददत्त,

दामोदरपण्डित, कृष्णदासठाकुर, कृष्णानन्दठाकुर।

व्रजलीला में—(क्रमत:) रत्नप्रभा, रतिकला, सुभद्रा, भद्र-रेखिका, सुमुखी, धनिष्ठा, कलहंसी, कलापिनी ॥

इनकी वांई ओर रामानन्दराय के आठ पार्षद:—

माधवाचार्य, नीलाम्बरठाकुर, रामचन्द्रदत्त, वासुदेवदत्त, नन्दना-चार्य, शङ्करठाकुर, सुदर्शनठाकुर, सुबुद्धिमिश्र ॥

व्रजलीला में—(क्रमत:) माधवी, मालती, चन्द्ररेखिका, कुञ्जरी, हरिणी, चपला, सुरभी, शुभानना ॥

इनकी वांई ओर शिवानन्दसेन के आठ पार्षद:—

श्रीरामपण्डित, जगन्नाथदास, जगदीशपण्डित, सदाशिवकवि-राज, रायमुकुन्द, मुकुन्दानन्द, पुरन्दराचार्य, नारायण-वाचस्पति ॥

व्रजलीला में—(क्रमत:) रसालिका, तिलकिनी, शौरसेनी, सुगन्धिका, कामिला, कामनागरी, नागरी, नागवेलिका ॥

इनकी वांई ओरवसुरामानन्द के आठ पार्षद :—

मधुपण्डित, मकरध्वजकर, द्विजरघुनाथ, विष्णुदास, पुरन्दर-मिश्र, गोविन्दाचार्य, परमानन्दगुप्त, वलरामदास ॥

व्रजलीला में—(क्रमत:) कुरंगाक्षी, सुचरिता, मण्डली, मणि-कुण्डला, चन्द्रिका, चन्द्रलतिका, कन्दुकाक्षी, सुमन्दिरा ॥

इन की वांई ओर गोविन्दघोष के आठ पार्षद:—

काशीमिश्र, शिखिमाहाति, कालिदास, श्रीमान् पण्डित, कवि-चन्द्रठाकुर, हिरण्यगर्भ, जगन्नाथसेन, द्विजपीताम्बर ॥

व्रजलीला में ये (क्रमत:)—कलकंठी, शशिकला, कमला, मधु-रेन्दिरा, कन्दर्पसुन्दरी, कामलतिका, प्रेममञ्जरी ॥

इनकी वांई ओर वासुदेवघोष के आठ पार्षद:—

राघवपण्डित, रुद्रपण्डित, मकरध्वजपण्डित, कंसारिसेन,

श्रीवपण्डित, मुकुन्दकविराज, छोटे हरिदास तथा कविचन्द्र-आचार्य ॥

व्रजलीला में ये (क्रमतः) कावेरी, चारुकवरा, सुकेशी, मंजुकेशिका, हारहीरा, महाहीरा, हारकंठी, मनोहरा ॥

इन की बांई ओर माधवघोष के आठ पार्षद—

मकरध्वजसेन, विद्यावाचस्पति, गोविन्दठाकुर, कविकर्णपूर, श्रीकान्तठाकुर, माधवपण्डित, प्रबोधानन्दसरस्वती तथा बलभद्रभट्टाचार्य ॥

व्रजलीला में क्रमतः ये—

मंजुमेधा, सुमधुरा, सुमध्या, मधुरेक्षणा, तनुमध्या, मधुस्पन्दा, गुणचूड़ा तथा वराङ्गदा ॥

इन की बांई ओर गोविन्दानन्दघोष के आठ पार्षदः—

परमानन्दगुप्त, वल्लभठाकुर, जगदीशठाकुर, वनमालीदास, श्रीनिधिपण्डित, श्रीकरपण्डित, लक्ष्मणाचार्य तथा पुरुषोत्तम-पण्डित ॥

व्रजलीला में क्रमतः ये—तुङ्गविद्या, रसतुङ्गा, रंगवाटी, सुमङ्गला, चित्ररेखा, विचित्रांगी, मोदनी तथा मदनालसा ॥

द्वादश गोपाल की बांई ओर पूर्वाभिमुख में अष्ट गोस्वामी की भोग—

श्रीरूप, सनातन, रघुनाथभट्ट, रघुनाथदास, गोपालभट्ट, श्रीजीव, लोकनाथ तथा भूगर्भगोस्वामी ॥

व्रजलीला में क्रमतः यथा—

रूपमञ्जरी, लवंगमञ्जरी, रसमञ्जरी, रतिमञ्जरी, गुणमञ्जरी, विलासमञ्जरी, मंजुलालीमञ्जरी (नामान्तर लीलामञ्जरी) तथा प्रेममञ्जरी ॥

इन के बाद छै चक्रवर्ती, तथा अष्ट कविराज की भोग—

चक्रवर्तीगण प्रभु के सम्मुख पश्चिमाभिमुख में तथा कविराज-गण चक्रवर्त्तिगण के वामभाग में पश्चिमाभिमुख में बैठेंगे ॥

छै चक्रवर्ती—

श्रीवास, गोकुलानन्द, श्यामदास, श्रीदास, गोविन्द तथा रामचरणचक्रवर्ती ॥

अष्ट कविराजः—

रामचन्द्र, गोविन्द, कर्णपूर, नृसिंह, भगवान्, वल्लभदास, गोकुल तथा गोपीरमणकविराज ॥

छै चक्रवर्ती तथा अष्ट कविराज ये सब श्रीनिवासाचार्यप्रभु के शिष्य हैं।

पञ्चतत्त्व के दक्षिण-उत्तरमुख में पितृवर्ग की भोगमाला—

पितृवर्ग यथा—कुवेराचार्य, जगन्नाथमिश्र, तथा हाड़ाइ-पण्डित ॥

पञ्चतत्त्व की बांई ओर दक्षिणमुख में मातृवर्ग की भोग—

मातृवर्ग यथा—नाभादेवी, शचीमाता तथा पद्मावती ॥

मातृवर्ग की बांई ओर दक्षिणमुख में प्रियावर्ग का पङ्क्त—

प्रियावर्ग यथा—सीताठाकुरानी, श्रीठाकुरानी, विष्णुप्रिया, लक्ष्मीप्रिया, वसुधादेवी तथा जाह्नवाठाकुरानी ॥

छै चक्रवर्ती के दक्षिण-पश्चिममुख में सन्तानगण का पङ्क्त—

सन्तानगण यथा—वीरचन्द्रगोस्वामी, रामाई, नन्दाई, मीनकेतन, रामदास, अच्युतानन्द, कृष्णमिश्र, बलराममिश्र, गोपालदास, जगदीश, नन्दिनी, जंङ्गली, नरहरिसरकारठाकुर, मुकुन्द, रघुनन्दन, चिरञ्जीव तथा सुलोचन ॥

चौसठ महन्त के बांई ओर पूर्वमुख में ठाकुरगण का पंगत-ठाकुरगणतथा-नरोत्तम, श्रीनिवासाचार्य प्रभु तथा श्री श्यामानन्द ठाकुर' ॥

निवेदक अपने सम्प्रदाय के महाजनों के सिद्धान्तानुसार गुरुवग एवं गुरुस्थानीय पार्षदगण का कृष्णनिवेदित वस्तु द्वारा तथा अवशिष्ट पार्षदों को पंचतत्त्वनिवेदित वस्तु द्वारा भोग धरावें ॥

इति भोगमाला-समाप्त

॥ श्री गौराङ्गविधुर्जयति ॥

❀ श्री कृष्णचैतन्यदेवो जयति ❀

※-॥ प्रणामविधायकस्त्रोतम् ॥-※

श्री मद्गुरून्प्रपद्येऽहं वाञ्छाकल्पतरून्प्रभून् ।
येषां कृपाञ्जनेनापि नेत्रं याति प्रकाशिताम् ॥ १ ॥

श्री कृष्ण चैतन्य कृपाम्बुराशे,
संसारसिन्धौ पतिते मयि त्वम् ॥
कामादि-नक्र-ग्रसितेऽतिदीने,
द्रागदीनबन्धो करुणां विधेहि ॥ २ ॥

श्रीश्रीमत्कृष्णचैतन्यं वन्देऽहं करुणार्णवम् ।
जीवेभ्यः कृपया गुप्तां प्रेम-भक्तिं ददाति यः ॥ ३ ॥

यस्य प्रेम – प्रभावैरतिशयकरुणः श्रीलगोपालदेवः
प्राकट्यं प्राप्य लोकान्मदयति सततं भक्तवात्सल्यमूर्तिः ।
गोपीनाथश्च यस्य प्रणयवशमगात् क्षीरचोराभिधानः
तं श्रीमन्माधवेन्द्रं निरवधि शिरसा नौमि सानन्दचित्तम् ॥४

कृपारसनिधिं वन्दे श्रीनित्यानन्दमीश्वरम् ।
यत्कारुण्यकणेनापि विश्वं याति कृतार्थताम् ॥ ५ ॥

श्रीनित्यानन्दचन्द्रः पतिततततिगतिः पूर्णकारुण्ययुक्तः
श्रीमच्चैतन्यचन्द्रप्रियतमसुखदो जीव – निस्तारकारी ।

यत्कारुण्यप्रभावाद्भुवनजनगणो भक्तिमासाद्य गूढां
गायत्युच्चैः प्रमत्तः स तु मम शरणं दुर्गतेः जीवनञ्च ॥६॥
श्रीकृष्णचैतन्यगणाग्रगण्यं, भक्तिप्रचाराय कृतावतारम्।
दीनैकबन्धुं महितं जगत्यामद्वैतचन्द्रं शिरसा नमामि ॥७
श्रीमदद्वैतचन्द्रं तं बन्देऽहं जगतां गुरुम्।
येनाराधनहुंकारैश्चैतन्यः प्रकटीकृतः ॥ ८ ॥
तं बन्दे सततं भक्त्या पण्डितं श्रीलगदाधरम्।
यस्य केवलजीवातुः श्रीचैतन्यमहाप्रभुः ॥ ९ ॥
श्रीचैतन्यप्रियतमं बन्दे श्रीबासपण्डितम्।
यत्कारुण्यकटाक्षेण श्रीगौराङ्गे रतिर्भवेत् ॥ १० ॥
बन्दे श्रीहरिदासं तं श्रीमच्चैतन्यजीवनम्।
श्री कृष्ण नाम-महिमा-लोके येन प्रकाशितः ॥ ११ ॥
दामोदरमहं बन्दे गौराङ्गप्रियपार्षदम्।
येन श्रीकृष्णचैतन्यवाक्यदण्डेन तोषितः ॥ १२ ॥
पण्डितं जगदानंदं बन्दे प्रेमपरिप्लुतम्।
यः स्नेहेन वशीकृत्य गौरमन्नमभोजयत् ॥ १३ ॥
श्री मद् बक्रेश्वरं बन्दे पण्डितं करुणामयम्।
श्रीचैतन्यप्रियतमं नृत्योत्सवमहाद्भुतम्। ॥ १४ ॥
श्रीमद्विष्णुपुरीं बन्दे श्रीमद्भागवताम्बुधेः।
श्रीविष्णुभक्तिरत्नानां माला येन प्रकाशिता ॥ १५ ॥
श्री श्रीईश्वरपुरीं बन्दे सदा प्रेम-परिप्लुतम्।
बन्दे श्रीपरमानन्दपुरीं गम्भीरमानसम् ॥ १६ ॥
सार्वभौममहं बन्दे भट्टाचार्यमहाशयम्।
श्रीचैतन्यकृपापात्रं सर्वशास्त्रार्थपारगम ॥ १७ ॥
श्री मत्काशीश्वरं बन्दे श्रीगोविन्दमहामतिम्।
यत्प्रेम-सेवया नित्यं श्रीगौराङ्गसुखं ब्रजेत् ॥ १८ ॥

श्रीमत्स्वरूपस्य पदाब्जधूलिं बन्दामहे नित्यमतिप्रयत्नैः।
देहो द्वितीयश्च महाप्रभो र्योऽप्यत्यन्तगम्भीरमतिर्दयाब्धिः॥१९
यः श्रीयुतस्वरूपः सकलगुणखनिस्तप्तहेमाङ्गकान्तिः
श्रीमच्चैतन्यचन्द्रप्रियतमपरमः प्रेमपूर्णप्रतीकः।
श्रीराधाकृष्णलीलारतिरसरचनागानशास्त्रार्थविज्ञो
बन्दे तस्याङ्घ्रि पद्मं मधुरमधुरं मञ्जुलामोदचित्तम् ॥२०
यो रामानन्दरायो गुणनिधिरसिकः कृष्णचैतन्यभक्तः
श्री राधाकृष्णलीलामृतमधुररसप्रेममाध्वीकमत्तः।
गम्भीरश्चातिधीरो गुणगणचतुरो लोकरम्यस्वभावो
बन्दे तत्पादपद्मं निरबधि सुखदं नित्यमानन्दरूपम् ॥२१॥
श्री विद्यानिधिनामकं निरुपमं बन्दे प्रपन्नो मुदा
सर्वानन्दकदम्बनन्दनतनुजे प्रेम - प्रमत्ताकृतिम्।
श्रीचैतन्यमहाप्रभोः प्रियतमं गाम्भीर्यवन्तं सदा
यस्य स्नेहरसो भवन् गुणनिधी रौतिस्म गौरोहरिः ॥ २२ ॥
श्रीलाभिरामो जगति प्रसिद्धो,
यः सख्यभावामृतसिन्धुमग्नः।
प्रेम प्रमत्तो विदिताद्भुतेहा
तस्याङ्घ्रि- युग्मं सततं नमामि ॥ २३ ॥
पण्डितं जगदीशं तं बन्दे नित्यबिनोदिनम्।
यदाश्रयेन लोकानां चैतन्ये जायते रतिः ॥ २४ ॥
मुरारिं वासुदेवञ्च श्रीधरं विजयं तथा।
श्री चैतन्यप्रियान् बन्दे श्रीनवद्वीपवासिनः ॥ २५ ॥
श्री मुकुन्दं सदा बन्दे श्रीमन्नरहरिं तथा।
श्री रघुनन्दनं बन्दे सर्वान् श्रीखण्डवासिनः ॥ २६ ॥
नारायणीसुतं बन्दे दासवृन्दावनाभिधम्।
चैतन्यचन्द्रचरिते येनैवोद्धारितं जगत् ॥ २७ ॥

रामानन्दस्वरूपञ्च श्रीवासं हरिदासकम् ।
श्री चैतन्यप्रियतमान्सर्वान् वन्दे कृताञ्जलिः ॥ २८ ॥
श्री कृष्णचैतन्यपदारविंद-
माध्वीकपानेन सदैव मत्ताम् ।
वन्दामहे श्रीयुतकर्णपूरं
प्रीत्या वयं नित्यमतिविनम्राः ॥ २९ ॥
चैतन्यपादाब्जमरन्दलुब्धो,
गांधर्विकाकृष्णगुणैः प्रमत्तः ।
श्रीमूर्तितीर्थादिप्रचारकर्ता,
वन्द्यः सदा श्रीलसनातनो मे ॥ ३० ॥
यत्पादपङ्कजरजः शिरसा प्रणम्य
धन्या भवन्ति नितरां बहवो जगत्याम् ।
श्रीमत्सनातनतनुः सदयार्द्र चित्तो
मन्दस्य मेऽप्यनुदिनं शरणं स एव ॥३१॥
सनातनं प्रभुं वन्दे दीनदुःखेन दुःखितम् ।
यत्कृपालेशमात्रेण पामरोऽप्युत्तमो भवेत् ॥३२॥
श्रीरूपपादरेणुर्मे केवलं जीवनौषधम् ।
निपत्य भूमौ तं वन्दे यतः पूर्णमनोरथः ॥३३॥
श्रीमद्रूपपदाम्भोजधूलिं वन्दे निरन्तरम् ।
दशनैस्तृणमादाय भूयो भूयः कृताञ्जलिः ॥३४॥
श्रीरूपस्य पदारविंदयुगलं मूर्ध्ना निपत्य क्षितौ
वन्दे नित्यमहं शरण्यमतुलं सर्वाभिलापप्रदम् ।
श्रीचैतन्यकृपासुधाजलनिधौ मग्नस्य येनेह वै
राधाकृष्णनिगूढभक्तिविततिः प्रेम्ना प्रकाशीकृतः ॥३५॥
श्री रूपस्याङ्घ्रि पद्मं प्रणतगतिमहं नौमि भूमौ निपत्य
श्री राधाकृष्णलीलामृतसलिलनिधौ मज्जितो येन लोकः ।

श्रीमच्चैतन्यचन्द्रोऽतिशयकृपया यत्र शक्तिं प्रकाश्य
श्रीमद्वृन्दावनीयं मधुररतिरसं दर्शयामास सर्वान् । ३६॥
संसारकूपपतिते मयि दुष्टबुद्धौ,
कामादिसक्तहृदये करुणार्द्र चित्तः ।
दुर्वासनाहिगिलिते शरणं त्वमेव,
श्रीरूप दुर्गतजने करुणां विधेहि ॥३७॥
श्रीचैतन्यकृपासुधाब्धिलहरीसिक्तं गम्भीरं गुणैः
श्रीरूपप्रणयप्रमोदसरसीभङ्गार्दितस्वान्तकम् ।
श्रीवृन्दाविपिनेश्वरीगिरिभृतो लीलामृतास्वादकं
तं श्रीमद्रघुनाथभट्टमनिशं वन्दे प्रमोदान्वितम् ॥ ३८ ॥
तं भट्टरघुनाथाख्यं वन्दे भागवतीयकम् ।
श्रीचैतन्यप्रियतमं शरणागतपालकम् ॥ ३९ ॥
श्रीकृष्णचैतन्यकृपाभिसिक्तं, श्रीरूपसख्यामृतपूर्णचित्तम् ।
श्रीराधिकाकृष्णसुखाब्धिमग्नं,गोपालभट्टं प्रभुमाश्रयामि ॥४०
श्रीमद् गोपालभट्टप्रभुवरकरुणासागरो दीनबन्धो
स्तस्य श्रीपाद पद्मं नतजनशरणं सर्वदाहं नमामि ।
श्रीमच्चैतन्यदेवः परमसदयधीः सान्द्रकारुण्ययुक्तः
श्रीराधाकृष्णपादाम्बुजपरिचरणं, शिक्षयामास यस्मै ॥४१॥
श्रीदासरघुनाथाख्यं वन्दे दीनैकबान्धवम् ।
वासो नियमितो येन राधाकुण्डतटे सदा ॥ ४२ ॥
श्रीकृष्णचैतन्यकृपैकपात्रं श्रीराधिकाकृष्णपदाब्जभृङ्गम् ।
तेषाञ्च प्रेमामृतसिन्धुमग्नं, वन्दे सदा श्रीरघुनाथदासम् ॥४३
श्रीचैतन्यकृपासुधामयनदीवीचीभिरासिञ्चितः
श्रीमद्रूपसनातनप्रियतमश्रीजीववात्सल्यवान् ।
श्रीराधासरसीतटे विनिवसन् नामामृतानन्दितो
यस्तं श्रीरघुनाथदासमनिशं वन्दे कृपासागरम् ॥ ४४ ॥

वन्दे श्रीलोकनाथं तं श्रीमच्चैतन्यवल्लभम् ।
दयालुं करुणापूर्णं दीनानुग्रहकातरम् ॥ ४५ ॥
यः श्रीमान्लोकनाथः सकलगुणनिधिः भावगम्भीरचित्तः
श्रीमच्चैतन्यचन्द्रे विमलविनयधी र्नाममाध्वीकभृङ्गः ।
श्रीमद् वृन्दावनेशा-व्रजपतितनय-प्रेमपीयूषमत्तो
वन्दे तस्याङ्घ्रिपद्मं सततमनुपमं मोदरोमाञ्चिताङ्गः॥ ४६ ॥
दर्शितार्थो जनेभ्यश्च श्रीमद्भागवतस्य यः ।
तं नमामि सदैव श्रीजीवगोस्वामिनं प्रभुम ॥ ४७ ॥
श्रीमज्जीवः सदयहृदयो लोकदुर्गम्यभावो
भक्तेस्तत्त्वं परममतुलं सर्वशास्त्रे निगूढम ।
कृष्णस्यापि प्रचुरचरितं यश्चकार प्रकाशं
तस्य श्रीमच्चरणयुगलं नौमि नित्यं प्रपन्नाः ॥ ४८ ॥
श्रीजीवस्य पदारविन्दमतुलं वन्दामहे सर्वदा
वाञ्छाकल्पतरोः कृपार्द्र मनसो दीनैकबन्धो प्रभोः ।
श्रीमद्रूपसनातनाङ्घ्रि कमले भृङ्गायमानात्मनो
येन श्रीभगवन्महत्वविततेः सिद्धान्त आविष्कृतः ॥ ४९ ॥
यः श्रीमत्कृष्णदासः कविनृपतिवरः स्निग्धमुग्धस्वरूपः
श्रीमच्चैतन्यचन्द्रस्य चरितरचना भूरिकीर्ति र्जगत्याम ।
श्रीमद् वृन्दावने श्रीवृषरवितनयाकृष्णभावाब्धिमग्नो
वन्दे तत्पादयुग्मं सकलकुशलदं नित्यमानन्दयुक्तम ॥ ५० ॥
वन्दे श्रीकृष्णदासाख्यं कविराजं गुणालयम् ।
मज्जितं भुवनं येन कृष्णलीलामृतार्णवे ॥ ५१ ॥
आचार्यं श्रीनिवासाख्यं प्रभुं वन्दे कृपामयम ।
यत्पादकमलद्वन्द्वं गतिर्मे जन्म-जन्मनि ॥ ५२ ॥
आचार्यश्रीनिवासप्रभुरतिरुचिरस्तप्तकार्त्तस्वराभः
श्रीराधाकृष्णनामामृतमयजलधेरूर्मिनाकृष्टजिह्वः ।

यः श्रीवृन्दावनीयं मधुररतिरसं दर्शयामास लोकान्
तस्य श्रीमत्पादाब्जं मम कृपणमतेः जीवनं तद्धि नौमि ॥५३॥
यस्य श्रीमच्चरणकमलद्वन्द्वमाश्रित्य मद्‌-
प्रीत्या वाञ्छास्म्यविरतमहं कृष्णपादाब्जभक्तिम् ।
आचार्यः स स्फुरतु हृदये श्रीनिवासप्रभुर्मे
लोकान्सर्वान् य इह सदयो भक्तियुक्तांश्चकार ॥ ५४ ॥
वन्दे नरोत्तमं नाम श्रीठक्कुरमहाशयम ।
चन्द्रिकां प्रेमभक्तिं यश्चकार परमोज्ज्वलाम् ॥ ५५ ॥
कविराजं रामचन्द्रं तथा गोविन्ददासकम ।
श्रीनृसिंहं घनश्यामं वन्दे सर्वान्महामतीन् ॥ ५६ ॥
श्यामानन्दमहं वन्दे प्रेमानन्दपरिप्लुतम् ।
यस्मै श्रीराधिका स्वीयां तुलाकोटिं ददौ मुदा ॥ ५७ ॥
वन्दे श्रीरसिकानन्दं दीनानुग्रहकातरम ।
पश्वादिभ्योऽपि नामानि कृपयोपदिदेश यः ॥ ५८ ॥
सर्वाभिष्टप्रदान्वन्दे वैष्णवान्दीनवत्सलान् ।
येषां कृपालवेनापि सर्वविघ्नो विनश्यति ॥ ५९
सर्वेषां भक्तवृन्दानां गौरप्रेमवतां सताम ।
नित्यं पादरजो वन्दे मन्दधीरात्मशुद्धये ॥ ६० ॥
अज्ञोऽधमोऽपराधीश्च दुष्टो दोषाकरोऽस्म्यहम् ।
क्षम्यतां सर्व-मन्तुर्मे सर्वत्र कृपयान्विताः ॥ ६१ ॥
यः श्रद्धया पठेदेतान् श्लोकान्नतिविधायकान् ।
तस्मिन् श्रीकृष्णचैतन्यः सर्वथैव प्रसीदति ॥ ६२ ॥
॥ इति प्रणामविधायाख्यं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ केनचित् प्रकटीकृतम् ॥

जय जय जय जग–मङ्गलकारी

जन मनमोहन गौर कृष्ण विधु नदिया पूर घर वरज बिहारि ॥ध्रु०
नित्यानन्दचन्द्र हलधर हर कलिकलुप विषम अन्धियारि ।
श्रीअद्वैत परमकरुणा निधि दारुण भव दव दहने उधारि ॥
सुखद गदाधर धरनि बिदीत सिरिबासहि प्रेमभकति अधिकारि ।
गरुड गदाधर नरहरि हरिदास स्वरूप प्रिय गुपत - मुरारि ॥
सार्वभौम सिरि - वासुदेव बिद्यानिधि पुण्डरीक सुखकारी ।
सिरि जगदीश विजय बक्रेश्वर दामोदर वर विपद बिदारि ॥
रामानन्द मुकुन्द सुन्दरानन्द नयनानन्द प्रचारि ।
श्रीनिधि प्रबोधानन्द गौररसे गरगर हृदय न रहत सम्भारि ॥
रामानन्दराय रससागर परमानन्द गूपत धृति धारि ।
राघव रघुपति राम महिश्वर करन प्रेमधन मुदित विकारि ॥
काशीश्वर परमेश्वर नारयण सुदर्शन नयन फल चारि ।
रूप सनातन रघुनाथ श्रीजीव भक्ति - वर रतन उघारि ॥
श्रीगोपालभट्ट रघुनाथ द्वी लोकनाथ चैतन्य – मुरारि ।
वासुघोष माधव गोविन्द रूप्रेम जलधि मधि सतत सॉतारि ॥
श्रीधर परमानन्द पुरन्दर पहु गुणे निरत नयने झरु वारि ।
सिरि उद्धारण धनञ्जय रुञ्जय गौरदास यश बिसद बिथारि ॥
संकर रघुनन्दन महेष अभिराम शमन-भय भञ्जन कारि ॥
श्रीयदु मधु - पण्डित शुक्लाम्बर बृन्दावन बरपत रस भारि ॥
जगदानन्द मुकुन्द गानरत पहु रस बस निशि दिवस बिसारि ।
कर्णपूर कविलोचन जनलोचन गुणगण गायत नर नारि ॥
सिरि श्रीनिवास नरोत्तम श्यामानन्द सकल गनइ ना पारि ।
नरहरि भण मन आस पुरह निज दास करह अति दुखित नेहारि ॥

—गौरकृष्णभावनामृते

सूचना

यह साधककण्ठभूषण विशालरूपमें प्रस्तुत-करके भक्तों के समक्षमें उपस्थित करने का विचार है। इसमें प्रचुर धनराशि की आवश्यकता है। कुछ दिनसे स्वास्थ्य खराब होनेसे तथा अनेक प्रकार की अशान्तिके कारण यह कार्य तथा प्राचीन गोस्वामी साहित्यप्रकाशन कार्यमें काफी बाधा आई है। आगे प्रभु की जैसी इच्छा होगी वैसा होगा।

राधाकृष्णदास

अन्तिम चार पृष्ठ व मुखपृष्ठ गौरहरि प्रेस वृन्दावन में छपा,
शेष कुसुमसरोवरमें छपा।